राजा राममोहन राय

सौम्येन्द्रनाथ टैगोर

MT
923.654
R 812 T

भारतीय
साहित्यक
निर्माता

MT
923.654
R812T

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

राजा राममोहन राय

अस्तर पर छपल मूर्तिकलाक प्रतिरूपमे राजा शुद्धोदनक दरबारक ओ दृश्य देल गेल अछि जाहिमे तीन गोट भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक माय रानी मायाक स्वप्नक व्याख्या कय रहल छथि। हिनका लोकनिक नीचाँमे एक गोट देवानजी बैसल छथि जे ओहि व्याख्याकेँ लिपिबद्ध कय रहल छथि। भारतमे लेखनकलाक ई प्रायः सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

राजा राममोहन राय

लेखक
सौम्येन्द्रनाथ टैगोर

अनुवादक
केदार कानन

साहित्य अकादेमी

Raja Rammohun Roy : Maithili translation by Kedar Kanan of Soumyendranath Tagore's monograph in English. Sahitya Akademi, New Delhi (1995), Rs. 15.

© साहित्य अकादेमी

प्रथम संस्करण : 1995

Library IIAS, Shimla
MT 923.654 R 812 T
00117138

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली 110 001
विक्रय विभाग : 'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय
172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई 400 014
जीवनतारा बिल्डिंग, चौथा तल, 23 ए/44 एक्स, डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता 700 053
304-305, अन्ना सलाई, तेनामपेट, मद्रास 600 018
109, ए डी ए रंगमन्दिर, 109, जे. सी. मार्ग, बैंगलोर 560 002

मूल्य : पन्द्रह टाका

ISBN 81-7201-862-2

लेज़र-टाइपसेटिंग : अक्षरश्री, दिल्ली 110 032
मुद्रक : सुपर प्रिन्टर्स, दिल्ली 110 051

MT
923.654
R812T

Indian Institute of Advanced Study
117138
9.12.04
SHIMLA

विषय-सूची

भिनसरबाक अन्हार	७
जन्म आ प्रारंभिक संघर्ष	९
कलकत्ता मिशन	१४
इसाई पादरीलोकनि सँ विवाद	१६
शैक्षिक सुधार	२४
बंगला गद्यक जन्मदाता	२७
बंगलामे ध्रुपद गीत	२९
राजनीतिक सुधारक उत्साह	३०
प्रवर्त्तक पत्रकार	३६
आर्थिक सुधार	३८
ब्रह्मसभा आ ब्रह्मसमाज	४१
राममोहन इंग्लैंडमे	४५
राममोहनक प्रभाव	५०
राममोहन केर जीवनक महत्त्वपूर्ण तिथि आ घटना	५२
ग्रंथ-सूची	५४

Raja Rammohun Roy : Maithili translation by Kedar Kanan of Soumyendranath Tagore's monograph in English. Sahitya Akademi, New Delhi (1995), Rs. 15.

© साहित्य अकादेमी

प्रथम संस्करण : 1995

Library IIAS, Shimla
MT 923.654 R 812 T
00117138

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली 110 001
विक्रय विभाग : 'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय
172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई 400 014
जीवनतारा बिल्डिंग, चौथा तल, 23 ए/44 एक्स, डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता 700 053
304-305, अन्ना सलाई, तेनामपेट, मद्रास 600 018
109, ए डी ए रंगमन्दिर, 109, जे. सी. मार्ग, बैंगलोर 560 002

मूल्य : पन्द्रह टाका

ISBN 81-7201-862-2

लेज़र-टाइपसेटिंग : अक्षरश्री, दिल्ली 110 032
मुद्रक : सुपर प्रिन्टर्स, दिल्ली 110 051

MT
923.654
R812T

Indian Institute of Advance Study
117138
9.12.04
SHIMLA

विषय-सूची

भिनसरबाक अन्हार	७
जन्म आ प्रारंभिक संघर्ष	९
कलकत्ता मिशन	१४
इसाई पादरीलोकनि सँ विवाद	१६
शैक्षिक सुधार	२४
बंगला गद्यक जन्मदाता	२७
बंगलामे ध्रुपद गीत	२९
राजनीतिक सुधारक उत्साह	३०
प्रवर्त्तक पत्रकार	३६
आर्थिक सुधार	३८
ब्रह्मसभा आ ब्रह्मसमाज	४१
राममोहन इंग्लैंडमे	४५
राममोहनक प्रभाव	५०
राममोहन केर जीवनक महत्त्वपूर्ण तिथि आ घटना	५२
ग्रंथ-सूची	५४

भिनसरबाक अन्हार

आधुनिक भारतीय इतिहासक अत्यधिक अंधकारमय युग, पुरान समाज आ राजतंत्र तहस-नहस भऽचुकल छल। ओऊर अवशेष चारूकात छिड़िआयल पड़ल छल। कोनो ताकति नहि छल जे एहि सभ विकृतिकेँ समाप्त कऽदेअय। पुरान न्यों पर नव स्थापनाक प्रयत्नो नहि भऽरहल छल। मृत परम्परा, जड़ भेल रेबाज आ मूर्खतापूर्ण कट्टरता देशक जीवनी-शक्ति सोखि चुकल छल, निर्मम अन्हार चारूकात पसरल छल। व्यर्थता आ शुष्कताक एही प्रारम्भिक कालमे राममोहन रायक पदार्पण भेल।

महान व्यक्ति समयक संकेन्द्रित सृजनात्मकताक केन्द्र-विन्दु रहलाह अछि। ई सृजनात्मकता अदृश्य रूपसँ मानव सभ्यताक इतिहासक संचालन करैत अछि। जातिक सांस्कृतिक इतिहासक निरन्तरता सँ उदयक विरोध कहियो नहि रहैछ आ इतिहास मानव व्यक्तित्वसँ सृजित होयबाक संग-संग ओकर सृजनो करैत अछि।

समयक मांगकेँ बुझबाक दृष्टि, ऐतिहासिक प्रवाहक सारकेँ ग्रहण करबाक क्षमता आ अंत मे काजकेँ समाप्त करबाक लेल महत्तम सृजनात्मक प्रयासक दृढ़ संकल्प पर मानव-व्यक्तित्वक महत्ता आ सफलता निर्भर करैत अछि। अपन सृजनात्मक क्रिया-कलापक प्रक्रियामे व्यक्ति विरोधी बातक एकटा अजीब मिश्रण बनि जाइत अछि। एकदिस ओ अत्यन्त तटस्थ रहैत अछि तँ दोसर दिस अपनामे अत्यन्त डूबल। तटस्थ रहैत अछि तऽ ओकर अहं केर रंचमात्रो ओकर आदर्शक बाटमे नहि अबैछ, अपनामे डूबल रहैत अछि तऽ आदर्श आ अहं केर मध्यक दूरी मेटा जाइत अछि। मानव-इतिहासमे ई एक असाधारण बात थिक। मुदा एकर आवृत्ति बेर-बेर होइत रहैत अछि।

अठारहम शताब्दीक उत्तरार्द्धमे राममोहन राय भारतीय इतिहासक रंगमंच पर अयलाह। मुगल साम्राज्य छिन्न-भिन्न भऽ रहल छल। व्यापारी रूपमे आयल अंग्रेज शनैः शनैः सत्ताधारी बनैत जा रहल छल। पन्द्रह वर्ष पूर्वे, १७५७ मे, पलासीक लड़ाइ बंगालक भाग्य पर मोहर मारि चुकल छल। मुदा एम्हर-ओम्हर पसरल अराजकताक बादो एकटा नवीनता शनैः शनैः जन्म लेबऽलागल छल। अंग्रेजक माध्यमसँ पश्चिम मात्र व्यापारिक दृष्टिसँ भारत नहि आयल छल। भारतीय इतिहासकेँ नव रूप देब सेहो पश्चिमक एकटा उद्देश्य प्रमाणित भेल। पश्चिमी प्रभाव भारतकेँ ओकर जड़तासँ मुक्त कऽ देलक। ओ जागृतिक एकटा नव लहरि एतय प्रवाहित कयलक।

भारतमे मुसलमानक अयलाक पश्चात अनेक कल्पनाशील व्यक्ति हिन्दू आ इस्लाम धर्मक समन्वय करबाक लेल अवतीर्ण भऽ चुकल छलाह । ई एक ऐतिहासिक आवश्यकता छल । दादू, कबीर, गुरू नानक आ बाट तकनिहार अन्यान्य अन्वेषीलोकनिक समूह एहि महान कार्यमे अपन योगदान दऽ चुकल छलाह । समन्वय बाह्य परिवर्तन सँ संभव नहि, विभिन्न तत्वक आन्तरिक पारस्परिकता-सहयोग, मैत्री, एकता सँ संभव भऽ सकैत अछि । पश्चिमक संग देशक समन्वय ओहि समयक प्रमुख माँग छल आ इतिहासक ओहि विशिष्ट कालमे राममोहन राय भारतक भाग्य-विधाता सिद्ध भेलाह ।

जन्म आ प्रारंभिक संघर्ष

राममोहन रायक जन्म २२ मइ १७७२ कैं राधानगर गाममे भेल छलनि। तहिया राधानगर वर्द्धमान जिलान्तर्गत छल। बादमे एकरा बंगालक हुगली जिलाक उपविभाग आरामबागक अन्तर्गत कऽ देल गेल। खानकुल कृष्णनगरक उत्तरमे बनल एक छोट सन गाम मानल जाइत छल। एकरा हिन्दू संस्कृतिक गढ़ कहल जाइत छल। राममोहन राय एक रूढ़िवादी ब्राह्मण परिवारमे जन्म लेने रहथि। हिनक पूर्वज मुर्शिदाबादक मुसलमान शासकक नोकरीमे रहि चुकल छलाह। राममोहनक पिता रमाकान्त राय एक रूढ़िवादी ब्राह्मण छलाह। शास्त्र पर हुनक अटूट विश्वास छलनि। राममोहनक माय फूल ठकुरानी बुद्धिमती आ दृढ़ संकल्पवाली महिला छलीह।

फूल ठकुरानीकैं तीन गोट संतान भेलनि, दूटा पुत्र—राममोहन आ जगमोहन आ एकटा पुत्री। राममोहनक शिक्षाक प्रारंभ गामक एकटा स्कूलसँ भेलनि। एकटा मौलवीसँ ओ फारसीक शिक्षा सेहो प्राप्त कयलनि। तहिया पटना इस्लामी शिक्षाक केन्द्र छल। ओतहि राममोहन अरबी आ फारसीक अध्ययन कयलनि। कुरान आ इस्लामी धर्मशास्त्रसँ परिचित भेलाह। हुनका अरबी अनुवादक माध्यमे युक्लिद आ अरस्तुक विषयमे जनतब भेलनि। कुरानक गणतांत्रिक उपदेशसँ ओ बहुत प्रभावित भेलाह। अरबी चिन्तनमे तर्कक विकास हुनका पसिन्न पड़लनि। किछु वाद-विवादक विवेकशीलता हुनका नीक लगलनि। खास कऽ मुताजिल[1] आ सूफी-दर्शनक प्रभावक परिधिमे ओ अयलाह।

पटनासँ घुरलाक पश्चात् राममोहन हिन्दू-समाजमे पसरल मूर्तिपूजा आ अंधविश्वास पर निबंध लिखब शुरू कयलनि। रूढ़िवादी पिताकैं ई सह्य नहि भेलनि। ओ राममोहनकैं घरसँ निकलि जयबाक आज्ञा देलनि। राममोहन घर छोड़ि कऽ बहरा गेलाह आ एम्हर-ओम्हर भटकय लगलाह। एहि क्रममे ओ तिब्बतक यात्रा कयलनि। ओतहु ओ बौद्ध धर्ममे समाहित कयल गेल मूर्तिपूजाक खण्डन कऽ तिब्बती लामा सभक शत्रु बनलाह।

वयसक एहि कालक विषयमे ओ अपन 'आटोबायोग्राफिकल स्केच' मे लिखने

---

१. मुताजिलक विवेकशील सम्प्रदायक स्थापना आठम शताब्दीमे वाजिल बी. आटा आ अम्र बी. उबेद बसरामे कयने रहथि।

छथि– 'जखन हम सोलह वर्षक रही, हिन्दू-समाजमे प्रचलित मूर्तिपूजाक औचित्य दिस संकेत करैत एकटा पाण्डुलिपि तैयार कयल। एहि पाण्डुलिपि आ एहि विषयक हमर अपन भावना–हमरा आ हमर निकट संबंधीक मध्य एकटा खाधि खुनि देलक। हमर यात्रा जहिनाक तहिना रहल। किछु दोसरो देश गेलहुँ। मुदा बेसी भारतेक सीमामे घुमलहुँ।'

किछु वर्ष भटकैत रहलाक पश्चात राममोहन बनारस गेलाह। अनेक वर्ष धरि ओतय रहि कऽ ओ हिन्दू-दर्शनक अध्ययन कयलनि। सन १८०३ मे राममोहनक पिताक मृत्यु भऽ गेलनि। एकर थोड़बे दिनक बाद राममोहन मुर्शिदाबाद चलि गेलाह।

मुर्शिदाबादे मे ओ 'तुहफात-उल-मुवाहिदीन' (एकेश्वरवादीकेँ एकटा उपहार) नामक एकटा निबंध लिखलनि। ई निबंध फारसीमे लिखल गेल। एकर भूमिका अरबीमे छल।

भूमिकामे राममोहन मानव-मात्रमे विचारक सामान्य एकता दिस संकेत कयलनि, जतय एकटा अस्तित्व मात्र होइत अछि। भेद ओतहि सँ शुरू होइत अछि जतय ओहि एक अस्तित्वकेँ फराक-फराक विशिष्टताक संग स्वीकार कयल जाइत अछि। सम्प्रदायवादीक खण्डन करैत ओ लिखलनि, 'दुनियाँक अत्यधिक पिछड़ल जगह सँ हम घूमि आयल छी, मैदान आ पहाड़ पर सेहो गेलहुँ। हम सभठाम यैह पाओल जे लोक ईश्वरक एकटा अस्तित्व पर विश्वास करैत छथि। वैह एकटा अस्तित्व सृजन करैत अछि आ पालन सेहो। ओहि एकटा अस्तित्वकेँ कोनो खास ढंगसँ स्वीकार करबामे हुनक विश्वास नहि छनि। धार्मिक सिद्धान्तक नाम पर 'हराम' (गैर-कानूनी) आ 'हलाल' (कानूनी) क धर्मानुदेश हुनका सभक लेल कोनो अर्थ नहि रखैत अछि। आ एहि पूर्वपीठिकाक बाद हम एहि निष्कर्ष पर पहुँचल छी जे ओहि एक अस्तित्वकेँ स्वीकार करबाक प्रवृत्ति प्राकृतिक रूप सँ सम्पूर्ण मानव-मात्रमे पाओल जाइत अछि। कोनो एक वा अधिक देवताक प्रति मानवताक प्रत्येक धर्म, सम्प्रदायक झुकाव, ओकरा स्वीकार करबाक शिक्षा द्वारा मनुक्ख पर ऊपरसँ थोपि देल जाइत अछि।'

एहि निबंधमे राममोहन धर्म आ धार्मिक अनुभवक प्रश्न पर विवेकपूर्ण विवेचन प्रस्तुत कयलनि। ओ लिखलनि, 'ओ देश सुखी अछि, जाहिठामक लोक आदति आ सहज मेल-मिलापक परिणामक अन्तर बुझैत छथि। व्यक्ति आ जातिक प्रकृति-प्रदत गुणसँ परिचित होइत छथि। ओ लोकनि अपना शक्ति भरि भिन्न-भिन्न लोकक धार्मिक आदर्शक बीच बिना पक्षपातक सत्य आ फूसि परखैत छथि। प्रस्तोताक व्यक्तिगत स्थिति सँ प्रभावित भेने बिना हुनक संकल्पक जांच-पड़ताल करैत छथि, जाहि पर अधिकांश लोक आँखि मूनि विश्वास कऽ लैत छथि।'

ओ धर्मक तुलनात्मक अध्ययन पर जोर देलनि, एकेश्वरवादक उपलब्धि दिस दुनियाँक ध्यान आकृष्ट कयलनि। मानव-मात्रमे एकटा जन्मजात सूझबूझ होइत अछि।

ओ लिखलनि, 'मनुक्खक मस्तिष्क जँ स्वस्थ अछि तँ कोनहु धर्मक सिद्धान्तकेँ बुझबा सँ पूर्व वा तकरा बाद, किछु प्रश्न ओकरा मोनमे अभरैत छैक। ओ प्रश्न प्रमुख अछि वा गौण, ई देश-देश पर निर्भर करैछ। ओहि व्यक्तिमे कोनो पक्षपात नहि होइछ, ओ न्यायपूर्ण दृष्टिसँ देखैत अछि। विचार करैत अछि। ओहि व्यक्ति सँ ई आशा कयल जाइछ जे ओ फूसिमे सँ सत्यकेँ परखि लेत। भ्रममे सँ साध्यकेँ ताकि बहार करत। धर्मक नियंत्रण एक दोसराक विरूद्ध वैमनस्य बढ़बैत छैक। शारीरिक आ मानसिक ओझरा केँ जन्म दैत छैक। ओ व्यक्ति हुनका सभसँ प्रभावित नहि होइछ। ओकर ध्यान एकटा अस्तित्व दिस रहैत छैक। एकटा अस्तित्व, ब्रह्माण्डक संतुलन बनौने अछि। आ वैह व्यक्ति समाजक हित कऽ सकैत अछि।'

आँखि मूनि कऽ विश्वास कऽ लेबाक प्रवृत्ति, कार्य-कारणक जाँच-पड़तालक अयोग्यता, अन्धविश्वास आ अज्ञानक कारण थिक। जेना कि ओ लिखलनि, 'ओ कार्य-कारण पर विचार करबाक अयोग्यता, अभ्यास आ रीतिवश सोचैत अछि। कोनो नदीमे नहायब, कोनो गाछक पूजा करब वा साधु भऽ कऽ पैघ-पैघ धर्माचार्य सँ अपन पापक लेल क्षमा कीनल जा सकैत अछि, मुक्ति भेटि सकैत अछि, जीवनक सभटा पाप धोआ सकैत अछि। विविध धर्मक विशिष्टताक अनुसार विविध बात सोचल जाइत अछि। ओ सोचैत अछि जे ई शुद्धि ओकर विश्वासक आधार आ धर्माचार्यक चमत्कार थिक। ओकर विश्वास वा ओकर विक्षिप्ततासँ एहि सँ कोनो सम्बन्ध नहि। यैह कारण थिक कि जे एहि विश्वासकेँ नहि मानैत अछि, तकरा पर ओकर कोनो असरि नहि पड़ैछ। जँ ओकरा सभक काल्पनिक बातक कोनो असरि होइत तँ सभ देश पर एकर प्रभाव समान रूपसँ पड़ैत। कोनो एक खास देशक विश्वास आ आदति धरि सीमित नहि रहैत। ई ठीक थिक जे प्रभाव व्यक्ति-व्यक्ति पर अपन क्षमता आ शक्तिक अनुसार फराक-फराक पड़ैत अछि। कोनो विश्वासकर्त्ताक विश्वास पर निर्भर नहि करैछ। विषकेँ मिठाइ बूझि कऽ खयलासँ ओकर असरि नहि बदलि जाइत अछि। ई असरि खायबलाकेँ मारि दैत अछि।'

राममोहन अलौकिक शक्ति आ चमत्कारक सिद्धान्तकेँ नकारि देलनि। ओ लिखलनि, 'सामान्यतः साधारण मनुक्ख एकटा सनकमे काज करैत अछि। अपन ग्रहण शक्तिसँ फराक जखन ओ किछु देखैत, सुनैत वा पबैत अछि, जखन ओकर कोनो कारण ओकरा बुझबामे नहि अबैछ, तखन ओ अलौकिक शक्ति वा चमत्कारक बात करैत अछि। दुनियाँमे सबकिछु कार्य– कारणक क्रमिक सम्बन्ध सँ बान्हल अछि। सभटा रहस्य यैह थिक। प्रत्येक वस्तु एकटा कारण आ स्थिति पर आधारित अछि। जँ हम छोटो सन कोनो वस्तुकेँ ली, तँ हम देखेत छी जे प्रकृतिक प्रत्येक वस्तु सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड सँ जुड़ल अछि। मुदा अनुभवक ताकमे आ सनकमे कारण नुका जाइत अछि। दोसर व्यक्ति एहि अवसरक लाभ उठा कऽ अपन अलौकिक शक्ति दोसरा पर आरोपित करैत अछि। लोक ओकरा

बात मे आबि जाइत अछि आ ओ लोकक ध्यान अपना दिस आकृष्ट करबामे सफल भऽ जाइत अछि ।'

अलौकिक शक्तिक भ्रामक विश्वासक विरूद्ध राममोहन आबाज उठौलनि । एकर पुष्टि लेल ओ अनुमानात्मक तर्क सोझाँमे रखलनि । ओ लिखलनि,' अनुमानात्मक तर्क बुधियार लोकक लेल रक्षा-कवच भऽ जाइत अछि । एहि सम्बन्ध मे हम कहि सकैत छी जे कखनो-कखनो किछु अद्‌भुत वस्तुक कारण तकवामे हमर 'अनुमानात्मक तर्क' असमर्थ रहि जाइत अछि । किछु लोक ओहि कारणकेँ बुझि नहि पबैत अछि । एहना स्थितिमे हमरा सभकेँ अपन अन्तर्दृष्टिक सहयोग लेबाक चाही जे की हमर 'अनुमानात्मक तर्क' ओहि कारण सभकेँ बुझबामे अपन अयोग्यता मानि सकैछ वा ओहि कारणक सम्बन्ध कोनो एहन असंभव शक्तिसँ अछि, जे प्रकृतिक सिद्धान्तक परबाहि नहि करैत अछि ।'

ओ एहि असंगति दिस संकेत कयलनि । व्यावहारिक बातमे लोक एक-दोसराक पारस्परिक सम्बन्धकेँ नहि बुझैत, एककेँ कार्य आ दोसरकेँ कारण मानबा सँ अस्वीकार कऽ दैत अछि । मुदा जखन बात धर्म आ आस्थाक अबैत अछि, तखन एककेँ कार्य आ दोसर केँ कारण मानबामे कनियो नहि हिचकैत अछि । ओ ई नहि बुझैत अछि जे दुनूमे कोनो सम्बन्ध वा क्रम नहि अछि । उदाहरणस्वरूप, कोनो विपत्तिसँ बचबाक लेल गोहारि वा प्रार्थनाक सहयोग लेबामे ओकरा एकोरती संकोच नहि होइछ वा जंतर-ताबीज द्वारा बिमारीसँ बचबाक प्रयत्न ओ निः संकोच करैत अछि ।

राममोहन चमत्कारक पक्षमे देल गेल तर्क सभकेँ पूरा-पूरी नकारि देलनि । हुनका अनुसार नियमक उल्लंघनक शक्ति ईश्वरो लग नहि छैक, ई एकटा मानल सत्य थिक । ओ कहलनि जे, 'असंभव वस्तुक सृजनक शक्ति सर्जकमे नहि छैक ।' हुनका अनुसारेँ, 'भगवानक सिरजल संसारमे उपस्थिति, ईश्वरक अस्तित्वहीनता, टूटा विरोधात्मक बातक अस्तित्व वा एहि प्रकारक आओर बात असंभवक श्रेणीमे अबैत अछि ।' ओ एहि आत्मविश्वासकेँ सेहो ललकारलनि जे देवदूतक माध्यमसँ ईश्वर हमर सभक पथ-प्रदर्शन करैत अछि । एहि बातक पुष्टि लेल ओ विवेकपूर्ण तर्क सोझाँमे रखलनि । ओ कहलनि, 'प्रकृतिक आने वस्तु जकाँ देवदूतक अवतार आ अन्तर्ज्ञान सेहो बाहरी कारण पर निर्भर करैत अछि । ईश्वर सँ एकर कोनो सम्बन्ध नहि होइछ । एहि तरहक कोनो आविष्कारक आधार आविष्कारे होइत अछि ।'

राममोहनक मूल धार्मिक विचारकेँ सोझाँ रखबाक उद्देश्य सँ उन्नैसम शताब्दीक आरंभिक वर्ष मे हम तुहफात -उल-मुवाहिदीनक मूल-तत्वक विस्तारपूर्वक वर्णन कयल अछि । ओहि समय धरि ओ एकेश्वरवाद पर आधारित एक विश्वव्यापी धर्मक धारणा बना लेने रहथि ।

एहि समयक लगपास राममोहन ईस्ट इंडिया कम्पनीक राजस्व विभाग मे नोकरी

कऽ लेने रहथि । भागलपुर, रामगढ़ आ आनठाम काज कयलाक पश्चात १८०९ मे ओ उत्तर बंगाल स्थित रंगपुर मे राजस्व अधिकारी श्री जॉन डिग्बीक सहायक नियुक्त भेलाह । १८०९ सँ १८१४ धरि ओ रंगपुर मे रहलाह । अपन खाली समय ओ अध्ययन आ तर्क-वितर्क मे बितौलनि । एहि क्रममे हुनका एकट्टा तांत्रिक विद्वान हरिहरानन्द तीर्थ स्वामीसँ सम्पर्क भेलनि । हुनक सहायता सँ राममोहन तांत्रिक साहित्यक गंभीर अध्ययन कयलनि । रंगपुर ओहि समय एकटा कॉस्मोपॉलिटन केन्द्र मानल जाइत छल । जैनी आ मुसलमान सभ एतय व्यापार लेल अबैत रहैत छल । राममोहनक सम्पर्क जैनी सभ सँ सेहो भेलनि । ओ कल्पसूत्र आ दोसर जैन धार्मिक ग्रंथक गंभीर अध्ययन कयलनि ।

रंगपुरमे रहैत राममोहन योरोप आ इंग्लैण्डक राजनीतिक घटना सभमे सजग रूपसँ रूचि लेलनि । डिग्बी इंग्लैण्ड सँ जतेक रास अखबार वा पत्र-पत्रिका मंगबैत रहथि, राममोहन तकरा सभकेँ पढ़ैत छलाह । बाइस वर्षक आयु सँ ई अंग्रेजी सीखब शुरू कयने रहथि । एहि पत्र-पत्रिकाकेँ पढ़लासँ हुनक अंग्रेजीक ज्ञान बढ़लनि । योरोपीय राजनीतिक विचारधारा सँ सेहो ओ परिचित भेलाह । डिग्बीसँ हमरा सभकेँ ई ज्ञात भेल जे तत्कालीन योरोपीय उदारतावाद राममोहनकेँ आकर्षित कयने रहनि ।

कलकत्ता मिशन

सन १८१४ मे डिग्बी भारत छोड़ि देलनि तँ राममोहन ईस्ट इंडिया कम्पनीक अनेक वर्षक नौकरीकेँ त्यागि देलनि। ओ कलकत्तामे रहय लगलाह। आब ओ अपन जीवनक मिशन आरंभ करबाक लेल पूर्णरूपेण तैयार भऽगेल छलाह। रूढ़ि, धार्मिक संस्कार, अंध विश्वास आ रीति-रेबाज मे आबद्ध भारतक गंभीर आत्मबोध केँ नवजीवन देब, ओहि नव युग आ दुनियाँक तत्कालीन विचारधाराक लग आनब हुनक मिशन छल।

राममोहन जे कार्य-पद्धति अपनौलनि से हुनक स्वभावक अनुरूप छल। ओ शास्त्रक महत्त्वकेँ एकदम अस्वीकार नहि कयलनि, अपितु तकरा संग-संग मनुक्खक महत्त्व-बोध, ओकर सूझ-बूझ आ विवेक पर सेहो जोर देलनि। सत्य धरि पहुँचबा लेल ओ मीमांसा-पद्धति अपनौलनि। मीमांसा-पद्धति अर्थात् शास्त्रमे कहल गेल कोनो एक बातकेँ लेब, ओकर महत्त्वकेँ आँखि मुनि कऽनहि मानब, ओकर प्रामाणिकताकेँ तर्कक निकष पर राखब, ओहि पर नव ढंगेँ विवेचन करब आ तखन कोनो निष्कर्ष पर पहुँचब।

सन १८१५ मे प्रकाशित वेदान्तक बंगला अनुवादक प्रस्तावनामे ओ लिखलनि, 'शास्त्र ओ तर्क द्वारा निर्धारित बाट पर हमरा चलबाक चाही जाहि सँ एहि दुनियाँ आ एकरा बादक दुनियाँ मे सेहो हम सभ संतुष्ट रहि सकी।' केनोपनिषदक अंग्रेजी रूपान्तरणक प्रस्तावनामे ओ कहैत छथि, 'सत्यक स्थापना लेल शास्त्र, तर्क आ ईश्वरक दया–ई तीनू आवश्यक अछि। संभवतः शास्त्र आ तर्कक आगाँ हारि मानब सेहो ठीक नहि होयत। तर्ककेँ हमर सभक नैतिकताक विवेक आ ज्ञानक प्रकाश चाही। तकरा बाद हम सर्वशक्तिमान ईश्वरक दया पर निर्भर कऽ सकैत छी।'

शास्त्र सँ सम्बन्धित अपन विभिन्न निबंध सभमे राममोहन रहरहाँ वशिष्ठक निम्न पाँतिक उद्धरण देने छथि :

'जँ एकटा नेना कोनो तर्कपूर्ण बात कहैत अछि तँ ओकरा मानि लेबाक चाही, मुदा जँ ब्रह्मा सेहो कोनो तर्कहीन बात कहथि तँ नहि मानबाक चाही।'

उपनिषद कहैत अछि, असीमक बोधक साधन थिक ज्ञानेन्द्रिय, मस्तिष्क आ बुद्धि। उपनिषद कतहु नहि कहलक जे ब्रह्मतत्व–ईश्वरक ज्ञान–अलौकिक थिक। ई बोधक पहुंचसँ बाहर अछि। शास्त्रक सहयोग लेने बिना एकरा प्राप्त नहि कयल जा सकैछ। वेदान्त सेहो असीमक प्रतिबोध केँ ब्रह्माण्डक मूल कारण मानलक अछि। जन्म, जीवन

आ संहार एकर प्रमाण थिक। एहि सँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे मस्तिष्क, बुद्धि आ तर्कक सहयोगेँ ब्रह्मक अनुभूति होइत अछि। राममोहन सत्य धरि पहुँचबाक आ ओकर सूक्ष्म दर्शनक लेल ओही हेतुवादक सहयोग लेलनि। मुदा शास्त्रक प्रभुताकेँ ओ कहिया नहि नकारलनि। एतेक जोर अवश्य देलनि जे स्वीकार करबा सँ पूर्व शास्त्रक उपदेश सभक जाँच-पड़ताल होयबाक चाही।

सन १८१५ मे राममोहन आत्मीय संभाक स्थापना कयलनि। एहि सभाक अन्तर्गत ओ कुलीनवाद, कन्या बेचबाक प्रथा आ जाति-भेदक विरूद्ध आन्दोलन कयलनि। पिता आ पतिक सम्पत्तिमे स्त्रीक अधिकारक बात उठौलनि। सन १८१९ मे ई आत्मीय सभा बन्द भऽगेल। पुरान विचारक एकटा उपनिवेशवादी अंग्रेज जॉन बुल आ हिन्दू रूढ़िक पक्षधर 'समाचार चन्द्रिका' एहि उदारतावादक विरोध कयलक। दुनू मिलि कऽ राममोहनक विरूद्ध ठाढ़ भेल। रूढ़िवादी हिन्दूक धर्म-सभा सेहो राममोहनक कड़गर विरोध कयलक।

राममोहन स्पष्ट शब्दमे कहलनि,—'हम हिन्दू धर्म पर प्रहार नहि कयल। हमर प्रहार ओकर अंधविश्वास आ कट्टरता पर अछि।' तैयो हठधर्मी हिन्दू हुनक जानी दुश्मन भऽ गेल। जखन ओ सती-प्रथाकेँ मेटयबाक अथक प्रयास कऽ रहल छलाह, धर्म सभा खराब ढंगेँ हुनक विरोध कऽ रहल छल। एहि सन्दर्भ मे ध्यान देबाक बात ई थिक जे प्राच्य भाषाविज्ञ होरेस हाइमन विल्सन सती-प्रथा-उन्मूलनकेँ हिन्दू धर्म मे हस्तक्षेप मानलनि। राममोहन एहि बातक असत्यता सिद्ध कऽ देलनि। रूढ़िवादी हिन्दू विधवा स्त्रीकेँ जीवित जरा देबाक अपील कयलक। धर्म-सभा कलकत्ता सुप्रीम कोर्टक फ्रांसिस माथीकेँ अपन ओकील नियुक्त कयलक। कलकत्ता मे अपन भाषणक क्रममे माथी कहलनि, 'अहाँ सभक प्रतिनिधि बनि कऽहम इंग्लैण्ड जा रहल छी। अहाँ सभक अपीलक पक्षमे अपना दिस सँ कोनो कसरि उठा कऽ नहि राखब, हम तन-मनसँ एहि बातक प्रयत्न करब जे अहाँ सभक अपीलक कनियों उपेक्षा नहि भऽ पाबय।' मुदा एहि योग्य अंग्रेजक तमाम प्रयत्नक बादो सती-प्रथाक उन्मूलन भऽ गेल।

सन १८१५ मे राममोहन वेदान्त सूत्रक बंगलामे अनुवाद कयलनि। सन १८१६ मे ओ 'वेदान्त सार' क बंगला आ वेदान्तक अंग्रेजी अनुवाद कयलनि। एही वर्ष ओ ईश आ केन उपनिषदक बंगला आ अंग्रेजी अनुवाद कयलनि। सन १८१७ मे ओ कठ आ माण्डूक्य उपनिषदक बंगला अनुवाद कयलनि। वेदान्त आ उपनिषदक बंगला आ अंग्रेजी मे अनुवाद कयल जयबाक ई पहिल अवसर छल। सन १८२३ मे आ एकटा विवरणिका लिखलनि, 'हिन्दू स्त्रीक अधिकारापहरण', एहिमे ओ माँग कयलनि जे हिन्दू स्त्रीकेँ ओकर पिता आ पतिक सम्पत्तिमे सँ हिस्सा भेटक चाही। सन १८२७ मे ओ संस्कृत 'मृत्युञ्जय' क 'वज्रशुचि' क सम्पादन आ प्रकाशन कयलनि। एकर निबन्ध जाति-भेदसँ सम्बन्धित अछि।

इसाई पादरीलोकनि सँ विवाद

सन १८२१ मे 'कलकत्ता यूनिटेरीयन एसोसिएसन' क न्यों पड़ल। राममोहन एहि सभाक पथ–प्रदर्शन कऽ रहल छलाह। सभाकेँ हिनक आर्थिक सहयोग प्राप्त छल। देशक जनताक बहुमुखी प्रगति एहि सभाक उद्देश्य छल। एहि सभाक उद्देश्य आ प्रयोजनक निर्धारण राममोहन स्वयं कयने रहथि। जनसाधारणक उन्नतिक लेल जे सुझाओ ओ देलनि से प्रशंसनीय ढंगेँ आधुनिक छल। एतय एकटा बात ध्यान देबाक योग्य अछि जे राममोहन घोर आध्यात्मिक होइतो जीवनक आर्थिक आ व्यावहारिक पक्षक उपेक्षा नहि कयलनि अछि, जेना कि आध्यात्मिकता मे विश्वास करयबला रहरहाँ करैत छथि। व्यक्तिगत जीवनक विभिन्न पक्षक अटूट एकताकेँ ओ गंभीरतासँ बुझने रहथि। एहि सत्यकेँ ओ मानि लेने रहथि जे मानव-मुक्ति एक अंश मे नहि, सम्पूर्ण रूपमे भऽ सकैत अछि।

सभाक उद्देश्य आ प्रयोजनक चर्चा करैत राममोहन लिखलनि, 'आ तेँ जे डेग, शिक्षाक लाभकेँ बढ़यबाक लेल, अज्ञान-अंधविश्वास, कट्टरता आ धर्मान्धता दूर करबाक लेल, ज्ञानक स्तर उठयबाक लेल, नैतिकताक सिद्धान्तक शुद्धीकरण, व्यापक सहिष्णुता आ उदारताकेँ बढ़यबाक लेल उठाओल जायत, सभाक उद्देश्यक सीमा मे होयत। जनसाधारणक परिस्थितिमे सुधार, उपयोगी कला आ श्रमशील अभ्यासकेँ प्रश्रय दऽ कऽ जनसाधारणक सामाजिक आ पारिवारिक परिस्थितिमे सुधार एहि सभाक प्रयोजन थिक। अनुभवसँ सिद्ध अछि जे जखन मौलिक, प्राकृतिक ओ सामाजिक आवश्यकताक पूर्ति यथापूर्ण रूपेँ होइत अछि तखने बुद्धि, नैतिकता आ धर्मक उच्चस्तरीय विकासक आशा कयल जा सकैत अछि।'

एहि समयमे बंगाल स्थित सीरामपुर इसाई-धर्म-प्रचारकक बड्ड पैघ केन्द्र छल। एहि धर्मोपदेशकक प्रारंभिक जत्था मे ज्ञानी आ दयावान लोक अयलाह। ओहि मे सँ किछु गोटेक, विशेष रूपसँ श्रद्धेय विलियम कैरीक, बंगाल बहुत कृतज्ञ अछि। मुदा जेँ ई धर्म-उपदेशक वा धर्म-प्रचारक आ धर्म–परिवर्त्तन काज कऽ रहल छलाह, तेँ ओ स्वयं केँ साम्प्रदायिकताक शिकार होयबा सँ बचा नहि सकैत छलाह। हिन्दू धर्म-विरोधी प्रचारमे रहरहाँ हुनक पूर्वाग्रह प्रकट होइत छल। ई पूर्वाग्रह अज्ञानक सीमा धरि छल। राममोहन दू गोट परचा निकाललनि; एकटा बंगला मे 'ब्राह्मण सेबाधि' आ दोसर अंग्रेजी मे 'ब्राह्मनिकल मैगजीन।' एहि परचाक माध्यमसँ ओ सीरामपुर इसाई धर्म-प्रचारकक विरोध करैत हिन्दू अद्वैतवाद आ वेदान्तक प्रचार कयलनि।

राममोहन इसाईक त्रियेक परमेश्वरवाद (ट्रिनिटेरीयनिज्म) क कड़गर आलोचना कयलनि, त्रियेक परमेश्वरकेँ लऽ कऽ एकदिस राममोहन आ हुनक मित्र श्रद्धेय एडम आ दोसर दिस श्रद्धेय डाक्टर राइलैण्ड, लेफ्टिनेंट ह्वाइट आदिक बीच पैघ वाद-विवाद भेल। एकटा इसाई-धर्म-प्रचारक द्वारा त्रियेक परमेश्वरवादक पक्षमे देल गेल गणित पर आधारित तर्क केँ राममोहन, 'एशियाटिक जर्नल' मे छपल एकटा लेख द्वारा खारिज कऽ देलनि। ओ लिखलनि, 'त्रियेक परमेश्वरक पक्षमे किछु दिन पूर्व हम गणित द्वारा सिद्ध कयल गेल तर्क पर आधारित एकटा धार्मिक लेख पढ़लहुँ, ओ एहि प्रकारेँ अछि – 'जहिना तीन रेखासँ एकटा त्रिभुज बनैत अछि, तहिना तीन इकाईसँ एकटा ईश्वरक स्थापना होइत अछि।' आश्चर्य थिक जे सर आइजक न्यूटन सन महान गणितज्ञक दिमाग त्रियेक परमेश्वरक पक्षमे ई तर्क नहि ताकि पओलक, जकरा त्रियेक परमेश्वरवादी प्रकाशमे आनलनि। न्यूटनक लेल ई सहज छलनि। त्रिभुज आ ईश्वरक मध्यक ई समरूपता, भगवान आ एकटा रेखाक अस्तित्वकेँ नहि मानैत अछि। कोनो अवस्था वा सापेक्ष वस्तुस्थितिक कल्पित विस्तारक अस्तित्व केवल विचारमे संभव अछि। ई एकटा बात थिक।

'दोसर, पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा (होली गोस्ट) क एकत्वक प्रयासकेँ ई असफल बना दैत अछि, कियैक तँ त्रिभुजक तीनू भुजा अपन फराक-फराक अस्तित्व रखैत अछि।'

'तेसर, ई तीनू इकाई–पिता, पुत्र आ पवित्र आत्मा–ई अलग-अलग ईश्वर होयबासँ अस्वीकार करैत अछि, कियेक तँ अलग-अलग त्रिभुजक प्रत्येक भुजा त्रिभुज नहि बना सकैत अछि।'

'चारिम, ई हिन्दूक ओहि वर्गकेँ जकरा चतुर्बुदात्मक कहल जाइछ, एहि तर्क द्वारा अपन बात प्रमाणित करबाक अवसरि दऽदेत। चतुर्बुदात्मक अर्थात् ईश्वरक अस्तित्वक चारि भाग मे विश्वास करयबला। ईश्वरकेँ एकटा चर्तुभुज सँ तुलना करैत ओ ओकर चारू भुजाकेँ ईश्वरक चारि अस्तित्वमे प्रमाणित कऽ देत।'

'पाँचम, बहुदेववाद अर्थात् ईश्वरक अनेक रूपमे विश्वास करयबला हिन्दूकेँ ई तर्क देसी मन-मोताबिक लागि सकैत अछि।'

सन १८२० सँ १८२३ धरि इसाई-धर्म- प्रचारकक संग राममोहनक तर्क-वितर्क चलैत रहल। सन १८२० मे हिनक -'द प्रीसेप्ट्स औफ जीसस,' 'द गाइड टू पीस एण्ड हैपिनेस' पुस्तिका प्रकाशित भेलनि। एहि पुस्तिकाक प्रस्तावनामे राममोहन न्यू टेस्टामेंटक सैद्धान्तिक भाग–रूढ़ि, रहस्य, चमत्कारक विरोधमे अपन विचार प्रकट कयलनि। श्रद्धेय द्योकार श्मित राममोहनकेँ विधर्मी आ सत्यक संहारक कहैत हुनक भर्त्सना कयलक। राममोहन 'प्रीसेप्ट्स औफ जीसस' क बचाओ मे, 'एन अपील टू क्रिश्चियन पब्लिक' द्वारा श्रद्धेय द्योकार श्मितक आरोपक उत्तर देलनि। डा. जोशुआ मार्शमेन एकरा विरुद्ध 'द फ्रेण्ड औफ इण्डिया' मे लिखलनि। राममोहन 'सेकेण्ड अपील टू द क्रिश्चियन पब्लिक' द्वारा एकर उत्तर देलनि। ई १८२१ मे छपल छल। डाक्टर मार्शमेन फेर एहि विषय पर

'द फ्रेण्ड औफ इण्डिया' मे लिखलनि । राममोहनक 'फाइनल अपील टू द क्रिश्चियन पब्लिक' जनवरी १८२३ मे छपल । 'द प्रीसेप्ट्स औफ जीसस' क प्रस्तावनामे राममोहन लिखने छलाह, 'हम ई कहबाक लेल बाध्य छी जे न्यू टेस्टामेंट मे भेटयबला नैतिक सिद्धान्त कें जँ ओहिमे लिखल दोसर बातसँ फराक कऽ देल जाय तँ ई विभिन्न आस्था आ बुद्धिस्तरक लोकक मोन-मस्तिष्कक विकासमे बहुत सहायक होयत । कियैक तँ एकर ऐतिहासिक आ किछु दोसर भाग स्वतंत्र आ इसाई-विरोधी विचार राखयबलाक सन्देह आ वाद-विवादक कारण बनि सकैत अछि । विशेष रूपसँ चमत्कारिक बात ओकरा पर बहुत कम प्रभाव देत । कियैक तँ एशियोक निवासी कें जे धार्मिक कथा पूर्वज सँ भेटल छनि, ओ ओकरा सँ बहुत बेसी चमत्कारपूर्ण अछि । एकरा विपरीत नैतिक सिद्धान्त, जकर उद्देश्य सम्पूर्ण मानवजाति मे एकता आ शान्ति बना कऽ राखब थिक, पारलौकिकताक विचार सँ सुरक्षित अछि तथा ज्ञानी-अज्ञानी दुनूकें बुझवा मे समान रूपसँ अवैत अछि । धर्म आ नैतिकताक ई सरल नियमावली मनुक्खक आदर्श कें ईश्वरक ऊंच आ उदार विश्वासक स्तर धरि उठाबक लेल एतेक सुन्दरता सँ बनाओल गेल अछि आ मनुक्खक व्यक्तिगत तथा सामाजिक कर्त्तव्यक पालनमे ओकर व्यवहारक एतेक उचित नियंत्रण करैत अछि जे हम एकर एहि रूपमे लागू भेला पर नीक सँ नीक परिणामक आशा कऽ सकैत छी ।'

सीरामपुरक मिशनरी प्रेस हिन्दू अद्वैतवाद आ वेदान्त पर अपन प्रहार करिते रहल । राममोहन नवम्बर १८२३ क 'ब्राह्मनिकल मैगजीन'क अंक चारिमे लिखबाक लेल विवश भऽ गेलाह ।

एहि अंकक भूमिकामे ओ लिखलनि, 'अछैत एकर जे हम एहि पत्रिकाक तीन अंक मे, धार्मिक वाद-विवादमे अपमानजनक भाषाक प्रयोग नहि कऽ विनम्र निवेदन कयने छलहुँ, तैयो आश्चर्य आ दुखक संग हम ई देखैत छी जे एकटा मिशनरी प्रेस द्वारा निकलल, आ मिशनरी सज्जन द्वारा वितरित कयल गेल परचा मे वेदक सिद्धान्त पर नास्तिकताक सोझ आरोप लगाओल गेल गेल अछि आ ओकर अनुगामी होयबाक कारणेँ हमर गलत निन्दा कयल गेल अछि । ई हमरा दू वर्ष बाद 'ब्राह्मनिकल मैगजीन'क चारिम अंक छपबाक लेल विवश कऽ देलक अछि ।'

'हिन्दू धर्मक विश्वव्यापी उदारता, सहिष्णुता आ विनम्रताक निर्वाह करैत हम कोनो धर्मक विरोध कऽ सकैत छी । ईसाई-धर्मक विरोध तँ दूरक बात थिक । एहि धर्मक अनुयायीक प्रति हमर आदर हमरा एहि धर्मक कमीकें उघाड़ नहि करए दितय, जँ इसाई लेखक द्वारा हिन्दू धर्म पर निरन्तर कादो फेकबाक प्रवृति हमरा विवश नहि कयने रहैत । हमरा एखनो दुनू धर्मक तुलनात्मक विशिष्टताक सूक्ष्मतासँ जाँच करबामे बहुत प्रसन्नता होयत । मुदा शर्त ई जे इसाई लेख एहि विवादककें विनम्र आ आदरपूर्ण भाषामे क्रमहि राखथि, जेना कि साहित्यिक लोक आ सत्यक अन्वेषीकें शोभा दैत छैक ।'

त्रियेक परमेश्वरवाद पर राममोहनक दृष्टिकोणक तर्कपूर्ण उत्तर देबामे असमर्थ

भेला पर डाक्टर मार्शमेन हिन्दू धर्मक कटु आलोचना कयलनि। ओ कहलनि जे हिन्दूवादक मूल असत्यक जनक अछि। राममोहन उत्तर दैत कहलनि, 'हमरा मोन रखबाक चाही जे हम सभ गंभीर वाद-विवादमे ओझरायल छी। एक-दोसराकेँ नीक–बेजाय कहबामे नहि।' राममोहन आ इसाई-धर्म-प्रचारकक वाद-विवादकेँ लऽकऽ 'इंडिया गजट' केर सम्पादक राममोहन दिस संकेत करैत लिखलनि, 'एहिमे हुनक मस्तिष्क क तीक्ष्णता, हुनक बुद्धिक तर्कशीलता आ हुनक अद्वितीय स्वभाव प्रकट होइत अछि जाहिसँ ओ शालीनताक संग तर्क-वितर्क कऽ सकैत छथि।'

राममोहन धार्मिक विवादमे सदति यैह उच्चादर्श बनौने रखलनि। निरन्तर शान्त आ विनम्र रहलाह। अपन विरोधीक संग उदार मस्तिष्क आ व्यापक मोनसँ उपस्थित भेलाह। विवादक क्रममे कहियो मानसिक संतुलन नहि गड़बड़यलनि। विरोधीक नीक-बेजाय सेहो ओ सहज रूपेँ सहैत रहलाह जखन कि इसाई–धर्म–प्रचारक आ कट्टरतावादी हिन्दू, जकरा संग अनेक वर्ष सँ हिनक वाद-विवाद चलि रहल छलनि, निरन्तर हिनका नीक-बेजाय कहैत रहलनि। ओ जे किछु कहलनि वा लिखलनि, ताहिसँ हुनक विवेक, विश्वव्यापी दृष्टिकोण आ उदारता प्रकट होइत अछि।

राममोहनक एकटा आरो गुण छलनि, हुनक अखण्ड साधुता। एकबेर इसाई-धर्म प्रचारक संग एकटा वाद-विवादमे कहल गेल जे मूल बाइबिलक अध्ययन कयने बिना इसाई -धर्म पर बहस करबाक हुनका कोन अधिकार छनि। राममोहन ई तर्क मानि लेलनि। दू वर्ष धरि वाद-विवादसँ नितान्त फराक रहलाह। एहि बीच ओ लेटिन, ग्रीक आ हिब्रू भाषाक अध्ययन कयलनि। जेना कि ओ स्वयं कहने छथि, 'ई हमरा दू वर्षक बाद 'ब्राह्मनिकल मैगजीन'क चारिम अंक छपबा पर विवश कऽ देलक।' राममोहन द्वारा आरंभ कयल गेल नव जागरण सँ सम्बद्ध देनक प्रसंग श्री राखाल दास हालदार १९ जुलाइ १८५२ क 'इंडियन डायरी' मे लिखलनि, 'आइ हमरा एकटा यहूदी सँ गपशप भेल। ओ बतौलक जे राममोहन ओकरा मामासँ हिब्रू भाषा सीखब शुरू कऽ देलनि अछि, जाहि सँ ओ मूल बाइबिलक अध्ययन कऽ सकथि।' १५ नवम्बर १८२३ क 'ब्राह्मनिकल मैगजीन'क अंक चारिमे राममोहन अपन एकटा लेख देलनि। ओहि लेखकेँ ओ शिव प्रसाद शर्माक नामसँ लिखने रहथि। एहि लेख केर शीर्षक छल, 'एकटा हिन्दूक लेल इसाई धर्म केँ नकारबाक कारण।' एहि लेखमे ओ त्रियेक परमेश्वर आ जनकल्याणक लेल ईसामसीहक प्रायश्चित (एटोनमेंट औफ क्राइस्ट) पर बहस कयने छलाह। ई दुनू टा बात इसाई धर्मक अविभाज्य अंग थिक। अपन सहज तर्क-विलक्षणता, विवेक आ स्पष्टवादिताक संग ओ एहि दुनू सिद्धान्तक कमजोरी प्रमाणित कऽ देलनि।

इसाई-धर्म-प्रचारकक आक्रमणसँ वेदान्तक शिक्षाक रक्षा करैत तथा त्रियेक परमेश्वरवाद आ ईसामसीहक प्रायश्चित केँ अस्वीकारैत राममोहन 'द प्रीसेप्ट्स औफ जीसस' 'द गाइड टू पीस एंड हैपीनेस'क भूमिका मे लिखलनि,' एहि कारण सँ हम एहि

विषयक कोनो विवादमे ओझरयबासँ अस्वीकार करैत छी आ ईसामसीहक शब्दकेँ अंग्रेजीसँ बंगला आ संस्कृत मे अनुवाद कऽ अपन संगी सभक सोझाँ राखय चाहैत छी।' इसाई-धर्म-प्रचारकक संग राममोहनक विवादक सफलता आशातीत सिद्ध भेल। एक बेप्टिस्ट इसाई धर्म-प्रचारक श्रद्धेय विलियम एडम त्रियेक परमेश्वरक विरुद्ध एकेश्वरवादक पक्षमे राममोहनक विचारकेँ स्वीकार कऽ लेलक आ खुल्लमखुल्ला एकेश्वरवादी इसाई धर्मक पक्षमे त्रियेक परमेश्वरवादक खण्डन कयलक। कलकताक यूरोपीय समाजमे हरबिरड़ो मचि गेल। इसाई जनताक रोष एतेक बढ़ि गेल जे कलकत्ताक तत्कालीन विशप श्रद्धेय एडम पर धर्म-द्रोहक आरोप लगा कऽ भारतसँ आपस पठयबाक फैसला कऽ लेलक। मुदा इंग्लैण्डक अटर्नी जनरल सँ ई जानि कऽ जे धर्मक रूढ़ि छोड़ि देला पर आब दण्ड नहि भेटैत छैक, हुनका अत्यन्त दुख भेलनि ।

इसाई धर्मक रूढ़िकेँ नकारि ईसामसीहक शिक्षाक प्रचार करैत सीरामपुरक इसाई धर्म-प्रचारक द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'द फ्रेंड औफ इंडिया' अपन बीसम अंकमे, 'एकटा इसाई-धर्म प्रचारक' क एकटा लेख प्रकाशित कयलक जाहिमे राममोहन पर इसाई-धर्मक शत्रुताक आरोप लगौलक। क्रोध आ घृणासँ एहि अनुचित प्रदर्शनक उत्तर दैत १८२० मे राममोहन 'द प्रीसेप्ट्स औफ जीसस' क पक्षमे, 'इसाई जनतासँ एक अपील' लिखलनि। ई पुस्तिका अकाट्य तर्क, विवेकपूर्ण न्याय आ सहज शिष्टाचारक उत्कृष्ट नमूना थिक।

'द फ्रेण्ड औफ इण्डिया' क बीसम अंकमें राममोहन राय लिखलनि, 'ओहि पत्रिका मे 'एकटा इसाई धर्म प्रचारक' क हस्ताक्षरसँ 'द प्रीसेप्ट्स औफ जीसस' आ सम्पादक सम्बद्ध विचार पढ़िकऽ हमरा आश्चर्य आ निराशा दुनू भेल। एहिसँ पहिने जे हम हुनका द्वारा उठाओल शंकाक समाधान करी, हम जनतासँ निवेदन करब जे ओ स्वयं इसाइयत केर विरूद्ध जा रहल छथि। व्यक्तिकेँ बीचमे आनि कऽ ओकरा विधर्मीक संज्ञा देल गेल अछि। ई दृष्टिकोण अभद्र आ इसाइयतक विरूद्ध थिक ! इसाइयतक विरूद्ध एहि लेल जे विधर्मी शब्दक प्रयोग कऽ सम्पादक सत्य, भद्रता आ उदारताक नियमक उल्लंघन कयलनि अछि। सत्य, भद्रता आ उदारता तीनू इसाई धर्मक मुख्य तत्त्व थिक। हम बुझैत छी, समीक्षक वा सम्पादक क्यो न्यू टेस्टामेंटक नैतिक सिद्धान्तकेँ, 'ए गाइड टू पीस एण्ड हैपिनेस' कहिकऽ छपबा पर संग्रहकर्त्ता केँ विधर्मी होयबाक उपाधि नहि दऽ सकैत अछि। ओकर लेखन-शैली, 'द प्रीसेप्ट्स औफ जीसस' नैतिकता आ धर्मक एकटा संहिता थिक। ओकर विश्वास जे एहि ब्रह्माण्डक सर्जक आ पालक ईश्वर थिक अथवा ओकर ई बूझब जे ओहि उपदेश सँ सम्पूर्ण मानव जातिक कर्त्तव्यक निर्धारण होइत छैक, ओकर अपन विश्वास थिक।

इसाई-धर्म-प्रचारकक दृष्टिमे राममोहनक'पाप' ई छल जे ओ ईसामसीहक नैतिक शिक्षाकेँ न्यू टेस्टामेंट मे भेटयबला रूढ़ि आ अंधविश्वास सँ अलग करबाक प्रयास कयलनि आ ई कहलनि जे ईसामसीहक शिक्षा सम्पूर्ण मानवजाति लेल एकटा संदेश थिक। प्रचलित

इसाई धर्मक रूढ़ि आ अंधविश्वास ईसामसीहक शिक्षाकेँ ग्रहण करबामे एकटा पैघ बाधक थिक। अपन एहि प्रयास लेल राममोहनकेँ इसाई-धर्म-प्रचारक द्वारा सत्य-विरोधी होयबाक उपाधि भेटलनि।

राममोहन एहि अपीलक अंत अविस्मरणीय शब्दक संग कयलनि, 'भगवान धर्मकेँ मनुक्ख आ मनुक्ख बीच भेदभाव तथा वैमनस्यकेँ नष्ट करयबला आ मानवजातिक एकता आ शांतिकेँ प्रश्रय देबऽ बला बनबथि।' एतय एकटा विश्वव्यापी धर्मक उद्‌भव चिह्न स्पष्ट देखार होइत अछि। 'प्रायश्चित' आ 'त्रियेक परमेश्वरवाद' आदिक जे तर्कपूर्ण विश्लेषण राममोहन कयलनि, ताहिसँ हुनक इसाई धर्म-ज्ञानक सम्पूर्ण रूपेँ पता चलैत अछि। अपन ज्ञानक शक्तिसँ ओ इसाई-धर्म-प्रचारकक वेदान्त आ हिन्दू धर्मक विरूद्ध संकुचित आ पूर्वाग्रही प्रहारक सोझाँ-सोझी ठाढ़ भेलाह।

ओना भारतमे इसाई-धर्म-प्रचारक लोकनि राममोहनक बर्बरतापूर्ण भर्त्सना कयलनि, मुदा यूरोप आ अमेरिका मे हुनक लेखकेँ पसिन्न कयल गेल। वेदान्त पर हुनक पहिल अंग्रेजी प्रकाशन सन् १८१६ मे सोझाँ आयल। ई लेख यूरोप आ इंगलैण्डमे पत्र-पत्रिकाक प्रशंसा प्राप्त कयलक। 'द मंथली रिपोजिटरी औफ थियालौजी एण्ड जेनरल लिटरेचर' वेदान्त पर राममोहनक प्रकाशनक विस्तारपूर्वक समीक्षा करैत लिखलक, 'एकटा हिन्दू पंडित राममोहन राय, जे ब्राह्मण छथि, एहि वर्ष कलकत्तासँ 'एन एब्रीजमेंट औफ द वेदान्त' नामक एकटा छोट पोथी प्रकाशित कयलनि अछि, आदि...। वेदक किछु अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंशक संकलन एहिमे कयल गेल अछि। प्राकृतिक धर्मक सिद्धान्तकेँ बहुत महत्त्वक संग राखल गेल अछि। पूजाविधि, ऋतु आ भोजनक महत्त्वकेँ बुझाओल गेल अछि। धर्म मे एकरो स्थान छैक भनहि ज्ञान आ ईश्वरक प्रेम प्राप्त करयबला एकरा अस्वीकारि देथि।'

ब्लॉइसक विशप एबे ग्रेग्वायर फ्रांसीसी भाषाक एकटा पुस्तिकामे राममोहनक विषयमे निम्नलिखित रोचक प्रसंग लिखलनि, 'प्रति छओ मासक बाद ओ एकटा पुस्तक बंगला आ अंग्रेजी मे प्रकाशित करबैत छथि। हुनक आस्तिकतावाद विकसित भऽ रहल छनि... विवादमे हुनका मोन लगैत छनि। दर्शन आ ज्ञानक परिपक्वताक कारणेँ कोनहु बात पर अपन आम विचार नहि दऽ कऽओ कार्य, कारण आ तर्क द्वारा ओकरा सिद्ध करैत छथि... हुनक आग्रह छनि जे हिन्दूक शास्त्रीय दर्शनक तुलना मे हुनका योरोपीय ग्रंथ सभमे किछु नहि भेटलनि।'

४ जून १८२४ केँ लिखल गेल डाक्टर टी. रीजक नाम राममोहन रायक एकटा पत्र मे हमरा सभ पढ़लहुँ, 'श्रद्धेय महाशय, पछिला १६ जूनक अहाँक लिखल पत्र भेटल। संगमे पार्सल द्वारा पठाओल गेल अहाँक पोथी सेहो भेटल। हम अहाँक कृतज्ञ छी। कमिटी द्वारा हमर संग्रह 'द प्रीसेप्ट्स औफ जीसस' क पुनः प्रकाशन आ एकरा पक्षमे दू गोट अपीलक सम्मान पर हमरा गर्व अछि। हमर निवेदन अछि जे एहि समर्थन लेल हमर हार्दिक

117138
9.12.04

आभार अहाँ सदस्यलोकनि धरि पहुँचा दी...। अपन प्रसन्नताकेँ व्यक्त करबाक भाषा हमरा लग नहि अछि। ई जानि कऽजे रोमी सत्ता-कालमे धीरे-धीरे जाहि मूर्ति-पूजाक अर्नगल मान्यता व्यवस्थामे आवि गेल, ओहिसँ मूलतः विशुद्ध, सहज आ यथार्थवादी इसाई-धर्मकेँ मुक्त करबाक लेल इंग्लैण्ड, अमेरिका दुनू ठाम सत्यान्वेषी मित्र लागल छथि। ओ अपन अभियानमे सफल होथि, वैह हमर कामना अछि। हुनका सभक नाम जँ बेसी नहि तँ लूथर जकाँ उज्जवल होनि, जे धार्मिक नव-निर्माणक काज आरंभ कयने रहथि, धार्मिक जगत पर जनिक ऋण अछि, जे मानवीय धर्म आ दैवी प्रभुत्वक अन्तर स्थापित कयलनि अछि आ आडम्बरसँ उदारता केँ फराक कयलनि अछि।'

इसाई धर्म आ वेदान्त पर राममोहन क लेख अमेरिका पहुँचल। थॉरो आ परमवादी एहि लेख सभसँ बहुत प्रभावित भेलाह। ओहि समयमे ओतऽ 'राय स्कूल' प्रगति कऽ रहल छल। सन् १८९४ क 'ओपेन कोर्ट मे मौनक्यूर डेनियल कॉनवे लिखलनि, 'राममोहने रायक कारण 'ब्रिटिश आ विदेशी यूनिटेरीयन एसोसिएसन' क स्थापना भेल। हिन्दू-धर्म-प्रचारकक किछु शिष्य अनेक स्थान पर आस्तिकता आन्दोलन चलौलनि आ मद्रासस्थित अनुयायी श्री फॉक्स सँ सम्पर्क स्थापित कयलनि। सितम्बर, १८२० मे पार्लियामेंट कोर्ट मद्रासी अद्वैतवादी केँ पाँच टा अशर्फी योगदानक रूपमे पठौलक आ १८२४ मे कलकत्ता मे 'ऐंग्लो इण्डियन अद्वैतवादी संस्थान' क स्थापनाक लेल बीस पौंडक योगदान देलक। ई सभ तथ्य आ राममोहन राय द्वारा अनूदित धार्मिक हिन्दू कविता श्री फॉक्सकेँ अद्वैतवादहु सँ विशाल संगठनक प्रति जागरूक कयलक...। वास्तवमे धार्मिक विचारकक रूप मे 'हिन्दू' क इसाई दुनियामे कोनो जोर नहि अछि। श्री फॉक्ससँ पूर्वी दर्शनक पश्चिमी दर्शन पर प्रतिक्रिया आरंभ भेल, जे दिनानुदिन बढ़ैत गेल...। २५ मइ १८३१ केँ 'एसोसिएसन' अपन छठम वार्षिकी 'साउथ प्लेस चैपल' मे मनौलक। राजा राममोहन राय ओतय सही समय पर पहुँचलाह। समारोह मे फ्रांस आ ट्रांसिलवानियाक अद्वैतवादी उपस्थित रहथि आ हार्बड विश्वविद्यालयक प्रधान डा० कर्कलैंड सेहो आयल छलाह। राममोहन राय संक्षिप्त किन्तु प्रभावशाली व्याख्यान देलनि। अपन आकर्षक व्यक्तित्व आ प्रभावशाली व्याख्यान सँ सभमे चेतना भरि देलनि।'

स्मरणीय बात ई थिक जे राममोहन हिन्दू धार्मिक सिद्धान्तकेँ अंधकारमय करयबला रूढ़ि आ अंधविश्वासक कटु आलोचक छलाह। ओ ओहि लोक सभमे सँ नहि छलाह जे इसाई मिशनरीक आलोचनासँ वेदान्त आ हिन्दू धर्मकेँ बचयबाक लेल रूढ़ि आ अंधविश्वास क आश्रय लैत छल अथवा हिन्दू धर्मक दोषकेँ सेहो सत्य प्रमाणित करबामे लागल रहैत छल। ई पूर्वाग्रह सत्यक खोज करयबला व्यक्ति लेल अशोभनीय थिक। मुद्रा धर्मान्ध अनुयायीमे धार्मिक समस्याक प्रति बेसीकाल यैह दृष्टिकोण रहैत अछि। राममोहन राय एहि पूर्वाग्रहक विरोधी छलाह। अपन विशिष्ट संयम आ गरिमा सँ ओ सदैव रूढ़ि आ अंधविश्वास पर प्रहार कयलनि। जे धार्मिक हिन्दू दर्शन केँ दूषित कऽ

कैँ रखने छल, राममोहन संकीर्ण धर्मान्ध जकाँ कहियो ओकर समर्थन नहि कयलनि ।

राममोहन एकटा सर्वव्यापी धर्मक अन्वेषी छलाह । संसारक चारि गोट धर्म-हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, इसाई क तुलनात्मक अध्ययन कऽ ओकर मूल तत्त्वमे एकता स्थापित करयबला ओ संसारक पहिल व्यक्ति छलाह । विश्व धर्म धरि हुनक पहुँच भावनात्मक नहि भऽकऽसंश्लेषणात्मक छलनि । प्रोफेसर मोनियर विलियम्सक अनुसार धर्मक तुलनात्मक अध्ययनक प्रारंभ वैह कयने रहथि । आ मैक्समूलरक धारणा छलनि जे पूर्व आ पश्चिमक संयोगक प्रयत्न करयबला राममोहन पहिल व्यक्ति रहथि । राममोहन एहि बातकेँ नीक जकाँ बुझि गेल रहथि जे सर्वव्यापी सामंजस्य स्थापित करबाक लेल धर्मक सुधार आवश्यक छल । राममोहन रायक विचार आ क्रियाकलापक एहि पक्षक अद्‌भुत प्रतिपादन करैत डा. ब्रजेन्द्रनाथ शील स्वीकार कयने छथि जे, 'सही अर्थ मे ओ आधुनिक भारतक जनक छलाह ।'

एहि सन्दर्भ मे कलकत्ताक हुनक मित्र आ सहयोगी श्रद्धेय विलियम एडमक श्रद्धांजलिक चर्चा आवश्यक अछि–'ओ स्वतंत्र होथि वा नहि । स्वतंत्रताक परिवेश ओ सांस लेबाक लेल बना लैत छथि । जँ एहन परिवेश हुनका नहि भेटलनि तँ अपना लेल ओहि परिवेशक ओ सृष्टि कयलनि । एकटा प्राचीन अंग्रेज कवि जकाँ ओहो अनुभव कयलनि जे हमर राज्य हमर दिमाग थिक । आ एहि स्वतंत्र राज्य सँ आध्यात्मिक, सामाजिक आ राजनीतिक अत्याचारक सिद्धान्त पर ओ अथक आक्रमण करैत रहलाह । परिस्थितिक माँग छल । ओ हुनक एकटा अंग बनि गेल छलनि । आजादी सँ प्रेम भरिसक हुनक आत्माक सभसँ पैघ आवेग छलनि । आजादी मात्र शरीरेक नहि, दिमागक सेहो । आजादी मात्र काज करबाक नहि, विचार करबाक सेहो । कोनो आन्तरिक प्रेरणावश ओ अपने लोकक धर्म, अपने देशक रीति-रेबाज, अपने परिवार, अपने परम्परा, अपन व्यक्तिगत पद द्वारा आरोपित नियंत्रणमे रहबासँ, पददलित होयबासँ भागि निकललाह । बाटमे जँ विघ्न अयलैक तँ तकरा निर्भय भऽकऽ ओ खतम कऽ देलनि । जँ ओकर मानसिक स्वतंत्रता पर आक्रमणक आभासो भेलनि तँ राममोहन आघात आ अपमानकेँ गंभीरतासँ अनुभव कयलनि...व्यक्तिगत स्वतंत्रताक ई आग्रह... मानसिक स्वतंत्रतामे कनियो दखल देबाक प्रति एहि तरहक भावुक इर्ष्याक संगहि हुनकामे दोसराकेँ समान अधिकार देबाक परिपूर्णता सेहो छलनि । हुनको प्रति, जे धर्म आ राजनीतिमे सदैव हुनक विरोधी रहलाह । आ ताहूसँ बेसी हुनका प्रति, जनिका प्रकृति आ समाज सम्पूर्ण रूपेँ हुनका नियंत्रणमे छोड़ि देलक...स्वतंत्रताक प्रति ई प्रेम... योग्य उद्देश्यक प्रति हुनक आस्थासँ उत्पन्न एकटा विवेकपूर्ण विश्वास छल । एहन विश्वास, जे एकटा स्वस्थ संचालित आ स्वनियंत्रित स्वतंत्रता व्यक्ति आ समाजकेँ प्रदान करैत अछि । एहि स्वतंत्रताक आनन्दक सीमाकेँ ओ कोनो वर्ग, कोनो रंग, जाति, देश आ धर्मक लेल सीमित नहि कयलनि । हुनक सहानुभूति सम्पूर्ण मानवताक प्रति छल ।

शैक्षिक सुधार

राममोहन अनुभव कयलनि जे ओहि समयक शिक्षा पद्धतिमे बुनियादी सुधार कयने विना देशकेँ रूढ़िक तंद्रासँ जगायव संभव नहि होयत। संपूर्ण शिक्षा-पद्धतिक जांच-पड़ताल जरूरी अछि। भारत संसारमे फेरसँ अपन स्थान पाबि सकय, तकरा लेल एकटा विवेकपूर्ण आ वैज्ञानिक शिक्षाक आवश्यकता छलैक। जखन कम्पनी-सरकार एकटा एहन संस्कृत विद्यालय खोलवाक निर्णय लेलक, जाहिमे हिन्दू पंडित तत्कालीन प्रचलित शिक्षाकेँ आगू बढ़बितथि, तखन राममोहन एहि निर्णयक विरूद्ध आवाज उठौलनि। ओ चाहैत छलाह जे भौतिक विज्ञान-भौतिकी, रसायन शास्त्र तथा गणित आदिक शिक्षा देल जाय। ११ दिसम्बर १८२३ केँ ओ गवर्नर जनरल लॉर्ड एमहर्स्टकेँ एकटा पत्र लिखलनि जाहिमे ओ कहलनि, 'सरकार एकटा एहन विद्यालय खोलि रहल अछि, जाहिमे हिन्दू पंडित एहन शिक्षा देताह, जे एतय पूर्वहिसँ प्रचलित अछि। ई विद्यालय (लार्ड बेकनसँ पूर्व योरोपीय विद्यालय जकाँ) आजुक युवापीढ़ीकेँ, ओकरा मस्तिष्ककेँ मात्र व्याकरणक सुन्दरता आ आध्यात्मिक विशेषतासँ भरिया देत जकर सामाजिक जीवनमे कोनो विशेष आवश्यकता नहि छैक। आइ सँ दू हजार वर्ष पूर्वहिक प्रचलित ज्ञान एहिठामक विद्यार्थी सीखि पाओत। एहिमे बढ़ोतरी मात्र एतबे होयत जे एहि ज्ञानमे आइधरिक विचारशील व्यक्ति सभ द्वारा जोड़ल गेल व्यर्थक फोंक टिप्पणी आरो बढ़ि जायत। यैह संपूर्ण भारतवर्ष मे एखन भऽ रहल छैक। जँ इंग्लैण्डकेँ वास्तविक ज्ञानसँ अनभिज्ञ रखबाक होइतैक तँ बेकनवादी दर्शनकेँ ओहि समयक शिक्षा-पद्धति (जे अज्ञानकेँ चिरस्थायी बनयबामे पूर्णतः समर्थ छल) क स्थान पर अयबाक अनुमति नहि देल जाइत। जँ ब्रितानी विधानक यैह राजनीति थिक जे एहि तरहक शिक्षा द्वारा एहि देशकेँ अज्ञानक अन्हारमे राखल जाय, तँ संस्कृत शिक्षा-पद्धति एहि देशकेँ अन्हारमे रखबाक लेल उत्तम रहत। मुदा जेना कि ब्रितानी विकासक लेल सरकार जनताकेँ केन्द्र मानैत अछि, ई बेसी नीक होयत जे विकसित आ प्रबुद्ध शिक्षा-पद्धतिकेँ प्रश्रय देल जाय। एहिमे गणित, भौतिक विज्ञान, रसायन शास्त्र आ शरीर शास्त्र एवं एहि तरहक अन्य उपयोगी विज्ञान पढ़ाओल जा सकैत अछि। योरोपीय शिक्षा प्राप्त किछु व्यक्तिकेँ एकरा लेल नियुक्त कयल जा सकैत अछि। हुनका लेल एकटा कॉलेज, जाहिमे सभटा जरूरी पोथी, अन्य उपकरण तथा वैज्ञानिक यंत्रादिक व्यवस्था हो, खोलल जा सकैत अछि।'

भारतक धर्माध्यक्ष विशप हेबर एहि पत्रकेँ लार्ड एमहर्स्ट धरि पहुँचा देलनि। 'जेनरल कमिटी औफ पब्लिक इन्स्ट्रक्शन' क सभापति श्री जे. प्एच. हैरिसन लिखलनि–'पत्र उत्तर देबा योग्य नहि।' लॉर्ड रिपन द्वारा १८८२ मे स्थापित शिक्षा कमीशन प्रतिवेदित कयलक, 'राममोहन द्वारा प्रस्तावित पॉलिसीकेँ, कमेटी बारह वर्षक विवाद, मैकालेक ओकालति तथा नवगवर्नर जनरल द्वारा एकटा निर्णायक डेगक पछाति स्वीकार कऽ पओलक।' राममोहन द्वारा शिक्षाक'टोल–पद्धति' क बदला वैज्ञानिक पद्धतिक ओकालति पर पुरानपंथी ओकर गलत व्याख्या, भ्रांतिपूर्ण उपस्थापन आ ओहि पर दुष्टतःपूर्ण आक्रमण कयलक। राममोहनक विरूद्ध संस्कृत पर आक्रमण तथा संस्कृतकेँ शिक्षा पद्धतिसँ पूर्णतया हटयबाक मिथ्या आरोप लगाओल गेल। एहि आरोपक प्रचार भेल। जे व्यक्ति संस्कृत साहित्यक अध्ययन आ हिन्दू अद्वैतवादक पालनक लेल १८२५ मे वेदान्त महाविद्यालय खोललनि, ओहि व्यक्तिक विरूद्ध एहन भयंकर असत्यक प्रचार-प्रसार कयल गेल। २७ जुलाइ १८२६ केँ लिखल गेल एकटा पत्रमे विलियम एडम लिखलनि, 'हालमे राममोहन एकटा अत्यन्त सुन्दर कॉलेज खोललनि अछि। तकरा ओ वेदान्त कॉलेज कहैत छथि। एहि कॉलेज मे किछु नवतुरिया एखन एकटा विज्ञ पंडित द्वारा संस्कृतक शिक्षा प्राप्त कऽरहलाह अछि। एहि शिक्षाक ध्येय हिन्दू अद्वैतवादक पालन आ प्रवर्तन थिक। एहि संस्थामे योरोपीय ज्ञान-विज्ञान आ इसाई अद्वैतवादक शिक्षा देबाक इच्छा सेहो राममोहनक छनि, शर्त मात्र एतबे अछि जे शिक्षाक माध्यम बंगला अथवा संस्कृत हो।'

राममोहन भीतर सँ चाहैत छलाह जे भारतमे शिक्षा वैज्ञानिक ढंग सँ देल जाय। जाहिसँ लोक अंधविश्वास आ अज्ञानकेँ दूर करय आ ज्ञानक प्रकाश दिस अग्रसर होअय। ठीक ओहिना जहिना योरोपीय समाजमे चर्च शिक्षा-पद्धति समाप्त कऽ वैज्ञानिक शिक्षाक प्रचार भऽ रहल छल। सन् १८१६ मे जखन हिन्दू कॉलेजक स्थापना भऽ रहल छलैक, ओ डेविड हेयर आ अन्य लोकक संग देलनि। मुदा जखन कट्टर हिन्दूलोकनि राममोहनक हिन्दू-कॉलेज क स्थापनामे सक्रिय सहयोगक विरोध कयलक तँ ओ स्वयं ओहि बाट सँ हँटि गेलाह। मुदा, एहिमे सन्देह नहि जे राममोहन हिन्दू कॉलेजक प्रमुख जन्मदाता मे सँ एक छलाह।

सुप्रीम कोर्टक मुख्य न्यायाधीश सर हाइड इस्ट, जनिका घर हिन्दू कॉलेजक स्थापनाक निर्णय लेबाक लेल १४ मइ १८१६ केँ एकटा बैसार भेल, इंग्लैण्डक एकटा जज श्री जे. हैरींगटन केँ बैसारक चारि दिन बाद एकटा पत्र लिखलनि,जाहिमे ओ कहलनि, 'हालहि मे एतय एकटा मजगर बात भेल अछि। लगैत अछि समयक संग-संग सभकिछु बदलैत रहैत छैक। मइक प्रारंभ मे कलकत्ताक एकटा ब्राह्मण राममोहन हमरासँ भेंट कयलनि, हिनका हम जनैत छलहुँ। अपन ज्ञान आ कर्मठ संघर्षक लेल एहिठामक प्रमुख

लोकमे ई बड्डड प्रसिद्ध छथि। ई हमरा कहलनि जे योरोपीय आधुनिक संस्था जकाँ एकटा संस्था एहिठामक प्रमुख हिन्दू स्थापित करय चाहैत छथि, जतय हुनक बच्चा सभकेँ उदार रूपसँ शिक्षा भेटि सकय। राममोहन हमर मदति चाहैत छलाह। हुनक इच्छा छलनि जे एहि योजनासँ हम सहमत भऽ जाइ आ अपना ओतय एकटा सभाक आयोजन कऽ हुनक सहायता करियनि...। जखन ओ चलि गेलाह तखन हम गवर्नर जनरलसँ गप कयलहुँ, ओ हमर संवादकेँ सुप्रीम काउन्सिलक सोझाँ रखलनि। सभ सदस्य हमर समर्थन कयलनि आ गवर्नर जनरल द्वारा सूचित कयल गेल जे जँ सभा हमरा घरमे होइत अछि तँ ताहिमे हुनका कोनो आपत्ति नहि छनि...। १४ मइ १८१६ केँ हमरा घर पर बैसार भेल। एहिमे पचास सँ बेसी रईस आ प्रमुख हिन्दू-जाहिमे दिग्गज पण्डितो छलाह-भाग लेलनि। लगभग पचास हजार टाकाक चंदा एकत्र भऽ गेल। किछु आरो देबाक वचन देल गेल...। बादमे सभाक किछु सदस्यलोकनि सँ गप कयला पर हमरा पता लागल जे ओहिमे सँ, विशेष रूप सँ एकटा उच्च कुलक धनाढ्य ब्राह्मण राममोहन रायक विरूद्ध छथि, किऐक तँ राममोहन हालहि मे हिन्दू मूर्ति–पूजाक विरूद्ध बहुत किछु लिखने रहथि आ एहि सन्दर्भ मे अपन देशवासीक बहुत निन्दा कयने रहथि।'

एहि उद्धरण सँ ई प्रमाणित भऽजाइत अछि जे राममोहन हिन्दू कॉलेजक जन्मदाता सभमे सँ छलाह आ जखन हुनका ई ज्ञात भेलनि जे हुनक उपस्थितिसँ एहि योजना केँ मटिआओल जा सकैछ, तखन ओ स्वयंकेँ योजना सँ फराक कऽ लेलनि।

सन् १८८२ मे राममोहन अपन खर्च सँ अद्वैतवादी संस्थाक तत्वावधानमे एकटा हाइ इंगलिश स्कूल आरंभ कयलनि। ओकर प्रबन्धकमे डेविड हेयर आ श्रद्धेय एडम छलाह। महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर एही स्कूलक छात्र छलाह। आन स्कूल सभमे विज्ञानक शिक्षा अंग्रेजी मे देल जाइत छल, मुदा एहि स्कूलपे विज्ञान बंगलामे पढ़ाओल जाइत छल। १८२१ मे दिसम्बर सँ राममोहन बंगला साप्ताहिक 'संवाद कौमुदी' क प्रकाशन कयलनि। एकर एकटा अंकमे ओ एकटा लेख लिखलनि। एहि लेखक माध्यमे सरकार सँ अपील कयल गेल जे निर्धन हिन्दू बच्चाकेँ निःशुल्क शिक्षा प्रदान करबाक लेल एकटा स्कूलक स्थापना कयल जाय। १८२१-२४ क बीच ओ अपन साप्ताहिक मे ई वैज्ञानिक लेख छापलनि–'चुम्बक केर विशेषता', 'माछक अचार', 'फुकनाक विवरण।' राममोहन बंगलामे व्याकरण, भूगोल, रेखागणित आ खगोल शास्त्र पर पाठ्य-पुस्तक लिखलनि।

राममोहनक मृत्युक बहुत दिनक बाद हुनक गणित, प्राकृतिक विज्ञान, रसायन शास्त्र आदिक शिक्षा-सम्बन्धी ओकालति कारगर सिद्ध भेल। एहिमे सन्देह नहि जे भारतीय शिक्षामे विज्ञानक प्रारंभ राममोहन रायेक कारणेँ भेल।

बंगला गद्यक जन्मदाता

उन्नैसम शताब्दीक प्रारंभमे बंगला गद्य अधिकतर संस्कृत शब्दक खिच्चड़ि आ अत्यन्त अनियमित छल। ओहि समय मे भाषा पंडितक दया पर निर्भर छल। एहन पंडितक दया पर, जाहिमे वेसी सँ वेसी क्लिष्ट संस्कृत शब्दक प्रयोगक धरोंहि लागल रहैत छल। ओहि समयक ई संस्कृतनिष्ठ बंगला, बंगला भाषाक अतिरिक्त किछुओ भऽसकैत छल।

प्रारंभिक रूपसँ बंगला गद्यक प्रवर्तक सीरामपुरक मिशनरी आ फोर्ड विलियम कॉलेजक पंडित छलाह। बंगालीमे इसाई धर्मक प्रचार करबाक लेल मिशनरीक स्थानीय भाषा मे रूचि लेब आवश्यक छल। आ जँकि फोर्ट विलियम कॉलेज सरकार चला रहल छल तँ कॉलेजक प्राध्यापक कँ भाषामे रूचि लेब स्वाभाविक छल। प्रशासन लेल सेहो बंगला गद्य आवश्यक छल तँ ब्रितानी अधिकारीकेँ बंगला पढ़ाओल जाइत छल, जाहिसँ जनसाधारणक संपर्क मे सहजतासँ आओल जा सकय।

सन् १७७८ मे हालहैडक बंगला व्याकरण अंग्रेजीमे छपल। ओकर मुखपृष्ठ पर लिखल छैक, 'पुस्तक विदेशीक उपयोगक लेल' (फिरंगियम उपकारार्थ) थिक। दोसर प्रयास सीरामपुरक प्रसिद्ध मिशनरी डा. विलियम कैरी कयलनि। सन् १८०१ मे कैरीक बंगला व्याकरणक प्रकाशन भेल। इहो व्याकरण अंग्रेजी मे लिखल गेल छल, आ एकर मुख्य उद्देश्य छल नव ब्रितानी लेखककेँ देशी भाषासँ अवगत करायब।

मुदा बंगाली लेल बंगला व्याकरण लिखबाक सर्वप्रथम प्रयास राममोहन राय कयलनि। इंग्लैण्ड जयबासँ पूर्व राममोहन 'बंगला भाषाक व्याकरण' (गौड़ीय व्याकरण) लिखलनि। 'कलकत्ता स्कूल बुक्स सोसाइटी' एकरा सन् १८३३ मे प्रकाशित कयलक। एहिमे एगारह अध्याय आ अड़सठि विषय अछि–व्याकरणक आवश्यकता आ उद्देश्यसँ लऽकऽ अन्त्यानुप्रास धरिक विषय एहि अध्याय सभमे अबैत अछि।

सन् १८०१ मे बंगला गद्य पर पहिल पुस्तक प्रकाशित भेल छल। कोनो रामराम बसु द्वारा ई पुस्तक विदेशी लेल पाठ्य-पुस्तकक रूपमे लिखल गेल छल। सन् १८०२ मे पंडित मृत्युंजय विद्यालंकार 'बत्रीस सिंहासन' छपलनि। ई निश्चित रूपसँ रामराम बसुक 'प्रातायादित्य चरित' क संशोधित रूप छल। जे किछु हो, विद्यालंकारक पुस्तक संस्कृतक शब्द सँ भरल छल आ प्रमुखतः एकटा पाठ्य-पुस्तक छल। एहि समयक बंगला गद्य पाठ्य पुस्तके धरि सीमित छल।

बंगला गद्य-संसारमे राममोहनक पदार्पण सँ एकटा क्रांतिकारी परिवर्तन आयल। सन् १८१५ मे राममोहनक प्रथम गद्य 'वेदान्त ग्रंथ' प्रकाशित भेल। ओहि समयक प्रचलित बंगला गद्यसँ ई सर्वथा फराक छल। ई कोनो पाठ्य-पुस्तक नहि छल मुदा ई मूलतः बंगला गद्यमे लिखल गेल छल। एहिमे क्लिष्ट संस्कृतक शब्दो नहि छल। बंगला गद्यक असली रूप एहिमे दृष्टिगत होइत अछि। राममोहन एकर प्रस्तावनामे पाठककेँ बंगला गद्य पढ़बाक तरीका बतौलनि अछि आ गद्यक वाक्य बनयबाक नियम बुझौलनि अछि।

राममोहनक निरभ्र विचार, ध्यान आ मौलिकताक ई एकटा असाधारण नमूना थिक। बंकिमचन्द्र चटर्जी आ रवीन्द्रनाथ ठाकुरक रचनाक अन्तर्गत बंगला गद्य जे अद्वितीय साहित्य-शैली पओलक, ओ राममोहन द्वारा निर्मित बंगला गद्यक कारणहि संभव भऽ सकल।

बंगलामे ध्रुपद गीत

संगीतंक क्षेत्रमे राममोहनक देन उल्लेखनीय अछि। उन्नैसम शताब्दीक पहिल दू दशक धरि बंगलामे जे गीत प्रचलित छल ओ अधिकतर ठुमरी, टप्पा, कीर्तन आ रामप्रसादी विधिसँ लिखल जाइत छल। बाउल, सारी, जारी आ एहि प्रकारक अन्य लोकगीत सेहो प्रचलित छल। मुदा बंगला भाषामे ध्रुपद गीत निट्ठाह अपरिचित छल। ताहि पर सभटा ध्रुपद गीतक रचना हिन्दीमे होइत छल। बंगलामे ध्रुपद गीतक रचना करयबला पहिल व्यक्ति राममोहन छलाह। सन् १८२८ मे अपन ब्रह्मसभाक लेल ई ध्रुपद गीतक रचना बंगलामे कयलनि। तकरो कारण छल। ध्रुपद गीत सन तरलस्पर्शिता, सरलता, आकर्षण, सुरक उत्सरण आ तेज–टप्पा अथवा ठुमरीमे नहि पाओल जा सकैछ। टप्पा आ ठुमरी एहन अवसरक लेल हल्लुक आ उल्लासपूर्ण मानल जाइत अछि। अपन ब्रह्मसभाक लेल ओ बंगला मे बत्तीस गोट ध्रुपद गीतक रचना कयलनि। हुनका बाद एहि कार्यकेँ ब्रह्मसमाज सम्हारलक आ महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुरक पथ-प्रदर्शन मे बंगला ध्रुपद गीत बहुत समृद्ध–सम्पन्न भेल।

राजनीतिक सुधारक उत्साह

राममोहन राय जनैत छलाह जे धार्मिक आ सामाजिक परिस्थितिमे जे सुधार ओ करय चाहैत छथि तकर प्रभाव भारतीय राजनीतिक प्रगति पर बेस नीक पड़तैक। सन् १८८२ मे ओ लिखलनि, 'हमरा दुख अछि जे हिन्दूक वर्तमान धार्मिक सिद्धान्त राजनीतिक विकासकेँ दृष्टिमे राखि कऽ नहि बनाओल गेल। जातिक विभिन्नता आ ओकर अनगिनत विभाजन ओकरा राजनीति सँ एकदम फराक कऽ देलक अछि। धार्मिक विशेषता, उत्सव, शुद्धीकरणक कानून एकरा कोनो साहसिक कार्यक लेल अयोग्य बना देलक अछि। तेँ हम सोचैत छी जे हुनक धर्म मे किछु परिवर्त्तन आवश्यक अछि, कम सँ कम राजनीतिक लाभ आ सामाजिक शांतिक दृष्टि सँ।' अतः राममोहन धार्मिक सुधार आ राजनीतिक तथा सामाजिक विकासक आन्तरिक सम्बन्ध केँ चीन्हि लेने रहथि।

सन् १८२१-२२ मे राममोहन दूटा साप्ताहिक बहार कयलनि। बंगला मे 'संवाद कौमुदी' आ फारसी मे 'मिरात-उल-अखबार।' संवाद-कौमुदीक पहिल अंकमे ओ 'जूरी ट्रायल' क प्रशंसा आ प्रेसक स्वतंत्रताक पक्षमे एकटा लेख लिखलनि। जूरी ट्रायल क आरंभ १७२६ मे मेयर कोर्ट मे भेल छल। जखन मेयर कोर्ट सुप्रीम कोर्ट मे बदलि गेल, तखनो वैह क्रम चलैत रहल। श्री वॉएन 'इण्डियन जूरी बिल' प्रस्तावित कयलनि, जकरा ५ मइ १८२६ मे संसद द्वारा स्वीकृति दऽदेल गेल। मुदा भारतीयक विरूद्ध भेदभाव बनल रहल। भारतीय केँ मात्र 'पेटी जूरी' मे बैसबाक आज्ञा छल, 'ग्रैंड जूरी'मे नहि आ इसाईक मोकदमा मे सेहो नहि। राममोहन भारतीयक प्रति एहि भेदभावक विरूद्ध अथक प्रचार जारी रखलनि।

ब्रितानी संसदक नाम ओ एकटा आवेदन पत्र पठौलनि, जाहिमे हिन्दू आ मुसलमानक हस्ताक्षर छल। संगहि हुनक व्यक्तिगत टिप्पणी सेहो छल। ५ जून १८२९ केँ आवेदन पत्र संसदक सोझाँ राखल गेल आ १८ जून १८३२ केँ ग्रांटक 'ईस्ट इण्डिया जस्टिस औफ पीस' आ 'जूरी बिल' केँ स्वीकृत कऽ लेल गेल। सीरामपुरक मिशनरीक 'समाचार दर्पण' एहि बिलक स्वीकृति पर राममोहन केँ बधाइ देलक।

प्रेसक प्रतिबंधित व्यवस्था (सेंसरशिप) सर्वप्रथम लार्ड वेलेस्लीक समय मे लागू कयल गेल छल। यद्यपि १८१८ मे लार्ड मोयरा द्वारा ई हँटा देल गेल छल, मुदा १८२३ क एक्टिंग गवर्नर जनरल श्री जान एडम प्रेसक विरूद्ध एकटा व्यवस्था आरोपित कयने

छलाह । गवर्नर जनरलक कौन्सिलक एक सदस्य डब्लयू. बी. बेली एहि आधार पर जे देशी प्रेस विशेषाधिकार प्राप्त प्रेसकेँ नीक–बेजाय कहि रहल अछि, प्रेसक स्वतंत्रता द्द कऽ देबाक समर्थन कयलनि । एहि संदर्भ मे 'मिरात-उल-अखबार' क चर्चा कयल गेल । मार्च १८२३ मे प्रेस व्यवस्था लागू होयबाक कारणेँ राममोहन 'मिरात-उल-अखबार' क प्रकाशन बन्न कऽ देलनि । अगस्त १८२२ क 'मिरात-उल-अखबार' मे प्रकाशित त्रियेक परमेश्वरक सिद्धान्त सँ सम्बन्धित निश्चित खोजकेँ सत्ताधारी 'अत्यधिक आपत्तिजनक' मानललनि ।

१० अक्तूबर १८२२ क सुप्रीम कौंसिलक विवरणमे हमरा सभकेँ निम्नलिखित टिप्पणी भेटैत अछि : '...दोसर फारसी पत्र 'मिरात-उल-अखबार' क विषय अधिकतर एहिना रहल अछि, जेना ऊपर कहल गेल अछि । मुदा सम्पादकक ब्रह्मज्ञान विषयक वाद-विवादक व्यवस्थापना अवसरक लाभ उठा कऽ त्रियेक परमेश्वर पर अपन टिप्पणी छपलनि अछि, जे मूढ़ आ प्रकारान्तर सँ कहल गेलहु पर हमरा जनैत अत्यधिक आपत्तिजनक थिक ।' १२ फरवरी १८२३ केँजे. एस. बकिंघम ('कलकत्ता जर्नल' क सम्पादक) केँ दू मासक भीतर भारत छोड़ि देबाक आदेश भेटलनि, कियैक तँ ओ किछु एहन लेख छपने रहथि जे सरकारक दृष्टिमे आक्रामक छल । विशेषतः ओ लेख, जाहिमे ईस्ट इण्डिया कम्पनीक अन्तर्गत स्टेशनरी क्लर्कक पदक स्वीकृतिक लेल स्काटलैंडक 'न्यू चर्च' क हेडमिनिस्टर डाक्टर ब्रायक केर आलोचना कयल गेल छल । बकिंघमक अनुसार कोनो एहन पदक स्वीकृति कोनो चर्चक मिनिस्टर द्वारा अनुचित छल । आ एहि लेखक कारणेँ १२ फरवरी १८२३ केँ बकिंघम केँ दू मासक भीतर भारत छोड़ि देबाक आदेश भेटलनि ।

ई आदेश जे. एडम द्वारा देल गेल छल, जे लार्ड हेस्टिंग्सक बाद अस्थायी रूपसँ गवर्नर जनरलक कार्य-भार सम्हारने छलाह । 'कलकत्ता जर्नल' केँ बन्द कऽ देबाक लेल बाध्य कऽ देल गेल । सहायक सम्पादक श्री सैंडफोर्ड आर्नोट बंदी बना लेल गेलाह आ हुनका भारत सँ निष्कासित कऽदेल गेलनि । १४ मार्च १८२३ केँ श्री एडम नव प्रेस–घोषणा प्रसारित कयलनि, जाहिमे अखबारक मालिक आ सम्पादक लेल सरकार सँ लाइसेंस प्राप्त करब आवश्यक भऽगेल आ सुप्रीम कोर्ट मे पंजीकरण क लेल प्रेस घोषणाक पेशीक ठीक दू दिनक बाद, १७ मार्च १८२३ केँ राममोहन, द्वारकानाथ ठाकुर, प्रसन्न कुमार ठाकुर आ तीन आन व्यक्ति सुप्रीम कोर्ट आ किंग इन कौंसिलक नाम एहि घोषणाक विरुद्ध एकटा अपील कयलनि । अपीलक प्रशंसनीय प्रारूप स्वयं राममोहन तैयार कयने रहथि । प्रारूप एहि प्रकारक छल,... ज्ञानक प्रसार एकदम रूकि जायत आ एहि ज्ञान-प्रसार सँ जे मानसिक विकास भऽ रहल अछि, खाहे सम्पन्न पूर्वी भाषा सँ क्षेत्रीय भाषामे अनुवादक माध्यमे, खाहे विदेशी प्रकाशन द्वारा प्राप्त साहित्यिक ज्ञान-प्रसारक माध्यमे.. एकटा योग्य शासकक दृष्टि सँ एतबे टा महत्त्वपूर्ण बात थिक । जनतासँ सोझ सम्पर्क, जे एकरा बिना

नहि भऽ सकैछ। देशक विभिन्न भागमे प्रबन्धक अधिकारीक व्यवहार जनताक प्रति केहन अछि, ई बात सम्राट धरि नहि पहुँचि सकैछ। एहिसँ देशवासी सम्राट आ हुनक सलाहकार समिति धरि अपन बात नहि पहुँचा सकैत अछि। स्थानीय सरकार सम्राटक सुदूर देशक विश्वासपात्र प्रजाक संग केहन व्यवहार कऽ रहल अछि, ई सम्राटकेँ पता नहि चलि सकैत अछि। जेना कि एखन भऽ रहल अछि। आब कोनो सूचना इंग्लैण्ड धरि नहि पहुँचि सकैत अछि। खाहे देशी प्रकाशनक अनुवादक माध्यमे जे एतय अंग्रेजी अखबारमे छपैत रहैत अछि आ योरोप पठाओल जाइत अछि अथवा अंग्रेजी अनुवादक माध्यमे जे एहिठामक लोक एहि संविधानक लागू होयबा सँ पहिने करैत रहल अछि... ।

प्रत्येक योग्य शासक, जे मानव–स्वभावक अपूर्वताकेँ बुझैत अछि आ दुनियाँक आन्तरिक शासक (अर्थात ईश्वर) क सम्मान करैत अछि, अपन विशाल राज्यक महान दायित्वक प्रति सजग रहैत अछि। ओ एहि बातक ध्यान रखैत अछि जे ओकरा धरि प्रत्येक एहन व्यक्तिक पहुँच होयबाक चाही जे जनताक विषयमे ओकरा सँ किछु कहय चाहैत अछि। जाहिसँ ई स्पष्ट भऽ सकय जे जनताकेँ अपन शासकक प्रयोजन कतय कतेक अछि। आ एहि उद्देश्य-प्राप्तिक एकेटा रस्ता अछि– अप्रतिबंधित प्रकाशनक स्वतंत्रता।'

सुप्रीम कोर्ट अपील बरखास्त कऽदेलक आ एहि सन्दर्भ मे अपन विरोध प्रकट करैत राममोहन अपन फारसी साप्ताहिकक प्रकाशन बन्न कऽ देलनि।

१८३१ मे, 'हाउस औफ कामन्स' क सैलेक्ट कमिटीक सोझाँ अपन बलिदानक रूपमे, ईस्ट इण्डिया कम्पनीक 'चार्टर'क नवीनीकरणक अवसर पर राममोहन सुझाओ देलनि जे जुडिसियल एसेसर आ ज्वाइंट जज क पद पर भारतीयक नियुक्ति होयबाक चाही। ओ नियमित जन- रजिस्टरक मांग कयलनि। सिविल आ फौजदारी कानून संहिताक स्थापनाक बात कहलनि। ओ सिफारिश कयलनि जे सरकारी खर्च कम होयबाक चाही। स्थायी सेना क स्थान पर किसानकेँ 'प्रजा रक्षक दल' बनयबाक चाही। न्याय-सम्बन्धी मामिला सँ प्रबन्धकेँ फराक राखल जयबाक चाही। ग्राम पंचायतक न्याय अधिकार-प्राप्त समितिक प्रचार नीक हेतैक।

१८४२ मे 'बंगाली स्पेक्टेटर' लिखलक, 'बादक चार्टर मे (१८३३) जे सुविधा हमरा भेटल अछि, तकरा लेल हम व्यापक स्तर पर राममोहनक ऋणी छी।' 'समाचार दर्पण' लिखलक, 'आइये नहि, भविष्यहु मे देशक ई सुविधा देअयबा मे ओ सहायक हेताह, हुनका देशक संरक्षक मानल जयतनि।' इंग्लैण्ड मे राममोहनक सचिव श्री आर्नोट राममोहनक सुझाव अंकित कऽ छोड़ने छलाह जे भारत मे इंग्लैण्डक राजनीतिक आ सांस्कृतिक मिशनक लेल ओ चालीस वर्षक सीमा निर्धारित कयने रहथि। हुनक विश्वास छलनि जे एतेक समयमे इंग्लैण्ड भारतकेँ विश्व–संस्कृति आ गणतांत्रिक सरकारसँ परिचित करा देत।

राममोहन इंग्लैण्डक 'सुधार आन्दोलन' क हृदय सँ समर्थन कयलनि । हुनका अनुसार ओ 'सुधारवादी आ सुधार विरोधीक बीचक संघर्ष विश्वव्यापी तानाशाही आ स्वतंत्रता, न्याय-अन्याय, गलत-सहीक बीचक संघर्ष छल । मुदा... हम स्पष्ट रूपेँ देखैत छी जे कट्टरता आ स्वेच्छाचारिताक बादो धर्म आ राजनीतिक क्षेत्रमे स्वतंत्र आदर्श बहुत दिनसँ अपन जगह बना रहल छल ।'

जून १८३२ मे जखन अन्ततः लार्डस बिल पास कऽ देलक तखन राममोहन बहुत प्रसन्न भेलाह । ओ अपन मित्र रथबोन केँ लिखलनि, 'तानाशाहक तीव्र विरोध आ राजनीतिक आदर्शक मांगक बादो 'रिफार्म बिल' क पूर्ण सफलताा पर आब हम प्रसन्न छी । राष्ट्र मात्र किछु चुनल लोकक शिकार नहि भऽ सकैछ जे दोसराक कीमत पर, पचास वर्ष सँ बेसीक ओकर भग्नावशेष पर अपन तिजौरी भरैत अछि... ।' 'रिफार्म बिल' जँ पास नहि भेल रहैत तँ एक व्यक्तिक रूपमे हम अपन सम्बन्ध एहि देश सँ तोड़ि लितहुँ... । ईश्वरक कृपा अछि, आब हमरा अहीं जकाँ एकटा सह-प्रजा होयबा पर अभिमान अछि । हमरा हार्दिक प्रसन्नता अछि जे राष्ट्रक मुक्ति देखबाक सौभाग्य हमरा भेटल अछि आ राष्ट्रेक कियैक, सम्पूर्ण विश्वक ।'

भारतेक नहि अपितु दुनियाँक प्रत्येक देशक गणतांत्रिक अधिकार आ स्वतंत्रताक संघर्षमे राममोहन अग्रणी रहलाह । १८२३ मे जखन स्पेनी तानाशाही सँ दक्षिण अमेरिका क स्पेनी क्षेत्र मुक्त भेल आ ई समाचार जखन राममोहन केँ भेटलनि तँ ओ अपना मित्र-लोकनि केँ भोज देलनि । क्यो एही अवसर पर भोजक कारण पुछलकनि तँ ओ कहलनि, 'हमर मित्र कतहु होथि, हमरा सँ हुनक सोझ सम्बन्ध हो वा नहि, हुनक धर्म अलग हो, हुनक भाषा अलग हो तँ की हम हुनक सुख-दुखमे सम्मिलित नहि होइ ?' सितम्बर १८२३ मे राममोहनक एकटा अंग्रेज मित्र, 'एडिनवर्ग मैगजीन' मे लिखलनि, 'दक्षिण अमेरिकाक उद्धार-प्रक्रियामे ओ जे सजग रूचि लेलनि, ताहि सँ हुनक मस्तिष्कक विशालता आ उदारताक अनुभव होइत अछि ।'

पुर्तगाल मे संवैधानिक सरकार लागू कऽ देवाक सूचना पाबि राममोहन बहुत प्रसन्न भेलाह । तुर्क सभक विरूद्ध यूनियनक स्वतंत्रता-संघर्षक ओ समर्थन कयलनि । सन १८१५ क तत्काल बाद नेपुल्समे एकटा 'कार्बोनरी सोसायटी' क स्थापना भेल । ई सोसायटी शीघ्रहि लोकप्रिय भऽगेल । १८२०-२१ मे नियोपालिटन कार्बोनरी नेपुल्सक राजाक विरूद्ध एक आन्दोलन कयलक, जाहिमे संविधानक माँग कयल गेल । सभ वर्ग मे समानताक बात पर जोर देल गेल । अपन भविष्य स्वयं निर्धारित करबाक अधिकार मांगल गेल । आन्दोलन कुचलि देल गेल आ दू गोट प्रमुख नेता–मोरेली आ सिलवटी केँ फांसी दऽदेल गेल । एहि समाचार सँ राममोहन केँ एतेक दुख भेलनि जे श्री बकिंघमक संग अपन एकटा निश्चित भेंट रद्द करैत ११ अगस्त १८२१ केँ ओ लिखलनि, 'एहि मध्याह्न अहाँक भोज मे

सम्मिलित नहि होयबाक लेल हम विवश छी। योरोपक टटका समाचार सँ हमर मोन अत्यन्त दुखी अछि... एहि दुखद समाचार सँ हम एहि निष्कर्ष पर पहुँचलहुँ अछि जे हम ई देखबाक लेल जीवित नहि रहब जे विश्व-स्वतंत्रता, योरोपीय राष्ट्र एशियायी देश–विशेषतः जतय योरोपीय उपनिवेश अछि–मे सुरक्षित रहय। जतेक छल ओतबे बहुत। एहि स्थिति सँ हम स्वयं कैं 'नियोपालिटन' क संग पबैत छी। हुनक शत्रु हमर शत्रु थिक। स्वाधीनताक शत्रु आ निरंकुशताक मित्र अन्ततः कहियो सफल होइत अछि।'

राजाराममोहन आयरलैंड पर ब्रिटिश अधिकारक विरोध कयलनि आ'मिरात-उल-अखबार' मे ओ एहि विषय मे लिखलनि। आयरलैंडक अकालग्रस्त लोकक लेल ओ सहायतार्थ धन पठौलनि। फ्रांसीसी क्रांतिक सूचना हुनका गंभीरतासँ प्रभावित कयलक। क्रांतिक तिरंगा झंडाक अभिवादन करबाक धड़फड़ी मे नाहसँ उतरैत काल हुनक पयरमे गंभीर चोट लगलनि। राममोहनक मोन मे स्वाधीनताक लेल असीम प्रेम छलनि आ हुनक धार्मिक, सामाजिक आ राजनीतिक गतिविधिक स्रोत सेहो यैह छलनि। स्वाधीनताक प्रति एहि प्रेममे सम्पूर्ण मानवता नुकायल छल। अठारहम शताब्दीक ओ पहिल व्यक्ति छलाह, जनिका सही अर्थ मे अन्तर्राष्ट्रवादी कहल जा सकैत अछि।

२६ दिसम्बर १८३१ कैं लंदन सँ प्रिंस टैलीरेंडक नाम लिखल गेल हुनक पत्र अपना ढंगक एकटा अद्भुत दस्तावेज थिक। एहि पत्रमे ओ फ्रांसीसी विदेश मंत्रीसँ निवेदन कयने रहथि जे फ्रांस जयबाक लेल हुनका पासपोर्टक स्वीकृति देल जानि। एहि पत्रमे राममोहन पासपोर्टक आवश्यकता समाप्त कऽ देबाक सिफारिश कयने रहथि आ कहने रहथि,'एहि प्रकारक नियम एशियायी देशमे सेहो अपरिचित अछि।' ओना धार्मिक पूर्वाग्रह आ राजनीतिक विभिन्नताक कारण ई एकदम विरोधी अछि। चीन एकटा अपवाद थिक, जतय विदेशीक प्रति इर्ष्या आ नव विचार, रीति-रेवाज कैं नीक दृष्टियैं नहि देखल जाइत अछि। अतः हम एहि बातकैं नहि मानि सकैत छी जे, जे देश आन बातमे अपन शिष्टाचार आ उदारताक लेल एतेक प्रसिद्ध हो, ओ एहि बातसँ अपरिचित बनल रहय। आब ओहि बातकैं मानि लेल गेल अछि जे मात्र धर्मे नहि, पूर्वाग्रह रहित सूझबूझ आ वैज्ञानिक खोज सँ एहि निष्कर्ष पर पहुँचल अछि जे समस्त मानवता एकटा विशाल परिवार थिक, जाहिमे अनेक राष्ट्र, अनेक जाति, ओकर शाखासँ बेसी किछु नहि थिक। अतः सभ देशक उदार लोक एहि बातकैं अनुभव करैत छथि जे सभ प्रकारैं मानवीय आदान-प्रदान समस्त मानवताक कल्याणक लेल आवश्यक छैक।

एही पत्रमे राममोहन अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्थाक बात लिखलनि, जकरा द्वारा राष्ट्र सभक आपसी मतभेद कैं दूर कयल जा सकय। ओ लिखलनि,' जतयधरि हमरा लगैत अछि, संवैधानिक सरकार बेसी कारगर भऽ सकैत अछि। जँ दू देशक राजनीतिक विभिन्नताक प्रत्येक बात एकटा एहन कांग्रेसक सोझाँ राखल जाय जे प्रत्येक संसद सँ

समान रूपेँ चुनल सदस्य सँ बनल हो। बहुमत प्राप्त सदस्य एक वर्षक लेल एहि कांग्रेसक सदस्य बनथि। प्रत्येक वर्षक सभा एक देशमे, दोसराक दोसरा देशमे हेबाक चाही। एहि कांग्रेसक माध्यमे कोनो दू टा सभ्य देशक बीच व्यावसायिक वा राजनीतिक झगड़ा संवैधानिक सरकारक संग निपटाओल जा सकैछ जतय दूनूक हितकेँ ध्यान मे राखल जाय। दुनूकेँन्यायक हिस्सेदार मानल जाय आ ई परम्परा पीढ़ी दर पीढ़ी जा सकैत अछि।'

एहि स्मरणीय पंक्ति सभसँ ई स्पष्ट अछि जे सन १८३१ हिमे राममोहन एकटा एहन व्यवस्थाक बात सोचि चुकल रहथि जे राष्ट्र सभक आपसी झगड़ाकेँ सोझरबैत रहय आ ओहिमे आपसी सुख-शांतिकेँ स्थापित राखय आ एहि तरहेँ विश्वशांतिक स्थापना हो। दुनियाँक कोनो राजनीतिक विचारक सँ बहुत पहिने ओ संयुक्त राष्ट्रसंघक बात ओही समय मे सोचि लेने रहथि।

प्रवर्त्तक पत्रकार

राममोहन राय द्वारा आरंभ कयल गेल सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक, राजनीतिक आ धार्मिक सुधारक आन्दोलनक उदारवादी उद्वेलन लेल एकटा अनुकूल अखबारक अत्यन्त आवश्यकता छलैक। समयक मांगक कारण बंगालक, आ विशेषतः कलकत्ताक, पत्रकारितामे बहुमुखी विकास भेल।

कलकत्ता सँ १८१६ मे सभसँ पहिने 'बंगला गजट' नामक बंगला साप्ताहिक आरंभ भेल। एकर संचालन राममोहन रायक 'आत्मीय सभा' क उत्साही सदस्य कऽ रहल छलाह। १८२० ई. धरि एकर प्रकाशन होइत रहल।

सीरामपुरक क्रिश्चियन मिशन १८१७ ई. मे बंगला साप्ताहिक 'समाचार दर्पण' क तथा अंग्रेजीक एक पत्रिका 'फ्रेंड औफ इण्डिया' क प्रकाशन आरंभ कयलक।

अंग्रेजीक पहिल उदार अखबार 'कलकत्ता जर्नल'क प्रकाशन, जेम्स सिल्क बकिंघम १८१८ ई. मे शुरू कयलनि।

१८२० ई. मे बंगला साप्ताहिक 'सम्वाद कौमुदी'क प्रकाशन ताराचन्द दत्त आ भवानीचरण वन्द्योपाध्याय शुरू कयलनि। जखन भवानीचरण सम्पादन छोड़लनि तँ राममोहन राय एकर कार्यभार सम्हारलनि।

राममोहन राय फारसीक साप्ताहिक 'मिरात-उल-अखबार' सेहो शुरू कयलनि। १८२३ ई. मे एकर प्रकाशन बन्द भऽगेल।

रूढ़ हिन्दूवादक मुखपत्र छल 'समाचार चन्द्रिका।' द्वारकानाथ टैगोरसँ अत्यधिक प्रभावित डाक्टर आर. एम. मार्टिन मइ १९२९ मे 'बंगाल हेराल्ड'क प्रकाशन शुरू कयलनि। राममोहन राय आ द्वारकानाथ टैगोर सेहो एहि अखबारक मालिक रहथि।

राममोहन रायक अनुयायी नीलरत्न हालदार बंगला, फारसी आ नागरीमे प्रकाशित होबऽबला 'बंगदूत' क सम्पादन कयलनि।

प्रकाशक आ पुस्तक विक्रेता सैमुएल स्मिथ 'बंगाल हरकारू'क शुरूआत कयलनि। द्वारकानाथ टैगोर एहि पत्रकेँ भरपूर आर्थिक सहायता कयलनि।

'द इंडिया गजट'क प्रकाशन १८३१ मे आरंभ भेल। द्वारकानाथ टैगोर एकर मालिक मे सँ रहथि। ई अपना समयक अग्रणी अखबार सभमे एक छल।

अर्द्ध-सरकारी मुखपत्र 'जानवुल' १८२१ मे शुरू भेल। ई बदनाम अनुदारवादी

अखबार छल। १८३२ मे ई बिका गेल। द्वारकानाथ टैगोरक मित्र स्टाक्वेलर एकरा हुनके आर्थिक सहायता सँ कीनि लेलनि। एकर नाम बदलि कऽ 'द इंगलिशमैन' राखि देल गेल।

एतय इहो कहि देब उचित होयत जे रवीन्द्रनाथ टैगोरक दादा द्वारकानाथ टैगोर मेघावी, धनिक आ प्रभावशाली व्यक्ति छलाह। ओ उदार भावना सँ ओत-प्रोत आ राममोहन रायक प्रशंसक तथा मित्र छलाह। तमाम सुधारवादी गतिविधि मे राममोहन रायकेँ हुनक निस्संकोच आ संपूर्ण सहयोग प्राप्त रहनि।

उन्नैसम शताब्दीक आरंभिक वर्षमे कलकत्ता मे उदारवादी पत्रकारिताक स्थापनामे द्वारकानाथ टैगोरक महत्त्वपूर्ण योगदान रहलनि। हुनक उद्देश्य राममोहन राय द्वारा संचालित आन्दोलनक बात जनता धरि पहुँचा कऽ सबल जनमत तैयार करब छलनि। द्वारकानाथ अपन अकबाल सँ ब्रितानी संसद सदस्य जार्ज थामसन केँ भारत आनि कऽ राममोहन राय द्वारा संचालित उदारवादी राजनीतिकेर न्यों मजगूत कयलनि।

बंगला पत्रकारिता राममोहन राय द्वारा संचालित आन्दोलन आ द्वारकानाथ टैगोरक दूरदर्शी आ प्रबुद्ध उदारताक लेल ऋणी रहत।

आर्थिक सुधार

भारतीय जनताक दयनीय आर्थिक स्थितिमे सुधारक लेल राममोहन राय निरन्तर प्रयासरत रहलाह। १८३२ मे राममोहन राय संसदीय समितिक सोझाँ गवाही दैत कहलनि, 'किसानक स्थिति अत्यन्त शोचनीय अछि। ओ सभ जमीन्दारक महत्त्वाकांक्षा आ लोलुपताक शिकार छथि...। सरकार लगानक दर निश्चित करवाक लेल जमीन्दारकेँ पूर्ण छूट दऽदेने अछि। एहि कर केर मिसियो भरि अंश किसानकेँ नहि देल जाइत अछि।' ओ स्पष्टतः कहलनि जे १७९३ ई० क परमानेंट सेटलमेंट जतय जमीन्दारकेँ लाभ पहुँचौलक अछि, ओतय गरीब किसान अपन दुर्गतिये भोगि रहल छलाह। लगान एतेक बेसी छल जे किसानक हालति पहिनो सँ बत्तर भऽ रहल छल। राममोहन राय लगान बढ़ाओल जयबाकेँ गेरकानूनी घोषित करैत एकरा कम करबाक मांग कयलनि। ओ भारतीय किसान (रैयत) क संग स्थायी समझौताक सुझाओ देलनि, जाहिसँ जमींदार किसानकेँ सता नहि सकय। ओ कहलनि जे जमीन पर कर कम कयलासँ होबयबला कमीकेँ भोग-विलासक साधन पर कर बढ़ा कऽ पूरा कयल जा सकैछ। बेसी वेतन पाबयबला अंग्रेज अफसरक स्थान पर हिन्दुस्तानी कलक्टरकेँ नोकरी दऽकऽ खर्च कम कयल जा सकैत अछि। गामक सहुकारा जकाँ जमीन्दारो किसान सँ फसिल वेचबाक कर जबरदस्ती ओसूलैत छल। राममोहन राय जमीन्दारक एहि जबरदस्तीक विरुद्ध सेहो आवाज उठौलनि।

राममोहन राय नोनक व्यापार पर ईस्ट इण्डिया कम्पनीक नोकरक एकाधिकारक विरोध कयलनि। ओ सभ एकर साधारण मूल्य एक हजार प्रतिशत बढ़ाकऽनोन बेचैत छल। लगभग एक लाख पचीस हजार नोन-मजदूर (मोलंगी) बंगालमे नोन बनबैत छल। एहि बेचारा सभक स्थिति दास जकाँ छलैक। नोन उत्पादनक लेल सरकार एजेंटक नियुक्ति करैत छल। तकरा बाद नोन केँ कलकत्ता लऽजा कऽ एकमुश्त थोकमे बेचल जाइत छल। तमाम व्यापार पर किछु भारतीय धनिकक कब्जा छलैक। ओ सभ एकरा दाबि कऽ रखैत छल आ मिलावट सेहो करैत छल। कम्पनी विदेशी नोनक आयात पर करक दर बहुत बेसी रखने छल।

राममोहन राय नोनक एकाधिकारक विरूद्ध आबाज उठौलनि। कियैक तँ सभ क्यो नोनक कमीक अनुभव करैत छल, तेँ ओ तर्क देलनि जे जँ नोनक मूल्य कम कऽ

देल जाय तँ एकर उपयोग बेसी मात्रामे होयत । सस्त आ नीक होयबाक कारणेँ अंग्रेजी नोनक आयातक अनुमति दऽआ मोलंगिया सभकेँ कृषि-कार्य मे लगाओल जयबाक चाही । ओ कहलनि जे मिलावटक स्तर ई छल जे माटि आ नोनमे अन्तर करब संभव नहि छल । संसदीय उच्च समिति (पार्लियामेंट्री सिलेक्ट कमिटी) सेहो राममोहन रायक एकाधिकार विरोधी मतसँ सहमति प्रकट कयलक । एहि तरहेँ हुनक आन्दोलन सफल भेलनि आ ईस्ट इंडिया कम्पनीक नोन एकाधिकार समाप्त भऽगेल ।

राममोहने राय पहिल व्यक्ति छलाह जे ब्रितानी शासक द्वारा भारतक सम्पति केँ अत्यन्त षडयंत्रपूर्ण ढँगसँ बाहर लऽ जयबाक विषयमे जनताकेँ चेतौलनि । ई भारतक विजेता अंग्रेज केँ देल गेल उपहार बुझल जाइत छल । 'भारतीय राजस्व व्यवस्था' पर प्रश्नक उत्तर दैत राममोहन राय कहलनि जे अवकाश प्राप्त अंग्रेजी अफसर-वर्ग देशक अपरिमित धन-सम्पदाकेँ विदेश लऽ जा रहल छल । ओ देशक एहि लूटकेँ प्रमाणित करबाक लेल किछु सूची तैयार कयलनि आ लिखलनि जे ईस्ट इंडिया कम्पनी पहिने महालेखापाल आ बादमे महालेखा– निरीक्षक रहि चुकल मेसर्स लायड एंड मेलबिलक हाउस औफ लार्ड्सक सिलेक्ट कमिटीक सोझाँ २३ फरवरी १८३० ई. केँ देल गेल बयानमे बताओल गेल छल जे भारत सँ प्राप्त होबऽ बला राजस्वक लगभग ३० लाख पौंड प्रतिवर्ष इंग्लैंड मे लागि रहल छल । एहि मे'बोर्ड औफ कंट्रोल' आ 'इंडिया हाउस' क खर्च, अनुपस्थिति भत्ता, यूरोपमे स्थित सरकारी आ फौजी अफसरक भारतमे कयल गेल सेवाक एवजमे व्याज सहित पेंशन आदिक रकम सेहो सम्मिलित अछि आ भारतमे क्षेत्रीय भंडारक लेल पठाओल जाय बला ४,५३,५८८ पौंडक राशि एहिसँ अलग अछि ।

ईस्ट इंडिया कम्पनीक बंगाल स्थित कुशल एवं वरिष्ठ अधिकारी अपन पुस्तक 'औन कालोनियल पालिसी एज एप्लीकेवल टू द गवर्नमेंट औफ इंडिया' (पृष्ठ-६०) मे बंगाल सरकारक बोर्ड औफ डाइरेक्टर्सक नाम लिखल गेल २८ जून १८१० ई. क एकटा पत्रकेँ उद्धृत कयलनि अछि । निदेशकक कहब अछि जे ई स्वीकार करब गलत नहि जे व्यक्तिगत खाताक माध्यमसँ लन्दन पठाओल जायबला राशिक दर लगभग २० लाख पौंड प्रतिवर्ष रहल अछि । ई तथा आन प्रामाणिक दस्तावेजक आधार पर लेखक अनुमान लगौलनि जे सार्वजनिक आ व्यक्तिगत स्तर पर भारत सँ १७६५ ई. आ १८२० ई. क बीच ९० करोड़ पौंडक भेंट लेल गेल ।

ओम्हर इंगलैंडमे स्वतंत्र व्यापारी आ इजारेदार सभमे पैघ स्तर पर घीचातीरी चलि रहल छल । राममोहन राय स्वतंत्र व्यापारीक पक्षमे आ इजारेदारक विरोध मे अपन विचार प्रकट कयलनि आ एहि काजमे हुनका द्वारकानाथ टैगोरक उल्लेखनीय समर्थन सेहो भेटलनि । दुनू अपन दूरदर्शिता सँ जानि लेलनि जे इतिहास, भारत पर ब्रितानी शासनक माध्यमसँ, भारतकेँ पछिला दशकमे मुसलमानी शासनक जड़तासँ मुक्त कऽ रहल अछि ।

बहुत दिन सँ भारत विश्व इतिहासक मुख्यधारा सँ अलग-थलग आ बाहर रहल छल । इंग्लैंड भारत कें एकर अस्तित्वक सम्पूर्णतामे ओहि मुख्यधारामे आनयवला शक्ति छल । आर्थिक क्षेत्रमे सहो इंग्लैण्ड भारतक औद्योगिक क्रांतिक काजकें अनचोक्के शुरू कऽ देलक । राममोहन आ द्वारकानाथ बंगालक कस्वामे अंग्रेज द्वारा उद्योगक स्थापनाक समर्थन एहि लेल कयलनि जे जमीन्दारक बर्बर अत्याचार सँ बचवाक लेल किसान सभकें रस्ता भेटि सकय । इहो प्रक्रिया अन्य ऐतिहासिक प्रक्रिया जकाँ क्रूर छल । जे किछु भेल से अवश्यम्भावी छल । ग़ामन्ती आर्थिक व्यवस्था सँ पूंजीवादी आर्थिक व्यवस्थामे परिवर्तन सह्जता सँ होयबाक उदाहरण संसारक कोनो इतिहासमे नहि भेटैछ । भारत मे सेहो एकर विपरीत नहि भऽ सकैत छल । राममोहन राय भारतक एहि आर्थिक क्रांतिक समर्थन कयलनि आ द्वारकानाथ सन मित्रसँ हुनका पूर्ण निष्ठाक संग सहयोग प्राप्त भेलनि ।

ब्रह्मसभा आ ब्रह्मसमाज

१८२७ ई. मे श्रद्धेय विलियम एडम 'आर. डट्टन' क नाम एकटा पत्रमे 'यूनि टेरियन एसोसिएसन' क विषयमे लिखलनि, 'एकर वर्तमान सदस्य छथि सर्वोच्च न्यायालयक बैरिस्टर थियोडर डिकन्स, मैकिन्टोस एंड कम्पनीक एकटा व्यापारी जार्ज जेम्स गार्डन, एकटा ओकील विलियम टेट, कम्पनीक शल्य-चिकित्सक वी. डब्लू. मैक्लायड, कम्पनी अनुबंध मुक्त अधिकारी नार्मनकेर, राममोहन राय, द्वारकानाथ टैगोर, प्रसन्न कुमार टैगोर, राधा प्रसाद राय (राममोहन रायक ज्येष्ठ पुत्र) आ हम ।'

यूनिटेरियन एसोसिएसन अत्यल्प कालहिमे समाप्त भऽ गेल । एहि संस्थाक विघटनक बाद राममोहन रायक शिष्यलोकनि एकेश्वरवादी आ आराधनाक लेल समर्पित संस्थाक स्थापना करब अत्यन्त आवश्यक बुझलनि । राममोहन रायक अनुयायी चन्द्रशेखर हुनका बहुत बुझौलकनि जे एकेश्वरवादी लेल कोनो एहन स्थान होयबाक चाही, जतय ओ सभ बिना कोने व्यवधानक अद्वैत गोष्ठी आयोजित कऽ सकथि । राममोहन हुनक सुझाव मानलनि आ २० अगस्त १८२८ कैँ ब्रह्मसमाजक उद्घाटन भेल । चन्द्र नगरवासी रामकमल बसुक घर किराया पर लेल गेल । बसु मोशायक अंग्रेज सँ व्यापारिक सम्बन्ध छलनि, तैँ कलकत्ता मे हुनका फिरंगी कमल बसुक नामसँ लोक जनैत छल । ब्रह्मसभाक सबसँ पहिल स्थान किराया पर ४८, चितपुर रोड छल । राममोहन रायक एकटा अनुयायी ताराचन्द चक्रवर्ती ब्रह्मसभाक प्रथम सचिव नियुक्त कयल गेलाह । एहि किरायाक मकानमे ब्रह्मसभा दू वर्ष धरि चलैत रहल । २३ जनवरी १८३० ई. कैँ एकरा अपन घर भेटि सकल । ब्रह्मसभाक उद्घाटनेक समय सँ एकटा विरोधी संस्था 'धर्मसभा'– रूढ़िवादी हिन्दू सभ सेहो स्थापित कयलक । रूढ़िवादी हिन्दूक जानल-मानल अगुआ राधाकान्त देव एकरो नेता बनि गेल रहथि ।

नव मकानक उद्घाटन कालमे मात्र एकेटा अंग्रेज मांटगोमरी मार्टिन उपस्थित छलाह । एहि उद्घाटनक विवरण हुनक पोथी 'हिस्ट्री औफ ब्रिटिश कालोनीज' मे भेटैछ । एहि विवरणसँ ज्ञात होइत अछि जे एहि अवसर पर पाँच सय हिन्दू उपस्थित छलाह । उद्घाटन सँ पहिने ८ जनवरी १८३० ई. कैँ राममोहन राय ब्रह्मसमाज ट्रस्टक दस्तावेज तैयार कयलनि । ई दस्तावेज विलक्षण लेख थिक जाहि मे उदार सहिष्णुता आ सार्वभौमिकताक सर्वत्र साम्राज्य अछि । एहि दस्तावेजक एकटा अंश थिक–'... ट्रस्टी

सदति एहि ट्रस्टक भवन, प्रांगण, चल-सम्पत्ति अथवा आवास आ ओहि सँ सम्बद्ध उपांगकेँ सभ तरहक लोकक सभाक लेल उपयोग करबाक स्वीकृति देत । कोनो तरहक भेदभाव नहि राखल जायत । मुदा एकरा लेल एकेटा शर्त अछि जे ओ मर्यादाक पालन करथि, सभ्य, धार्मिक आ श्रद्धालु व्यवहार सँ शाश्वत आ सनातन सत्ताक उपासना-पूजा मे व्यस्त होथि । वैह एहि ब्रह्माण्डक रचयिता आ रक्षक छथि... आ कोनो टा वस्तु, जीव वा निर्जीव, जे अछि वा आगाँ होयत, जे कोनो व्यक्ति वा व्यक्ति–समूहक लेल पूजनीय हो, तकर भर्त्सना, अनादर वा उपेक्षा, प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूप मे नहि करय, खाहे ओ धर्मोपदेशमे हो, स्तुति वा ईश–भजनमे हो वा प्रयुक्त हो... जाधरि ई भर्त्सना, अनादर वा उपेक्षा ब्रह्माण्क रचयिता आ रक्षकक संकल्प करबामे सहायक नहि हो आ दानशीलता, नैतिकता, पवित्रता, उदारता, सदाचार आ विभिन्न धर्म आ सम्प्रदायक बीच एकताक सूत्र मजगूत करबाक कारण नहि बनय ।'

ट्रस्टक एहि दस्तावेजसँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे राममोहन राय कोनो नव धर्म वा सम्प्रदायक रूपमे ब्रह्मसभाक कल्पना नहि कयने छलाह । ओ चाहैत छलाह जे विभिन्न धर्म सँ सम्बन्धित एकेश्वरवादी लोक ब्रह्मसभाक उपयोग करथि आ एकरा अपन मानथि । हुनक इच्छा छलनि जे ई सभ धर्म मे एकटा निराकार, शाश्वत, अमर आ सनातन ईश्वरमे आस्था राखयबला लोकक मिलन–स्थल बनि सकय । राममोहन राय स्वयंकेँ सार्वभौम धर्मक अनुयायी मानैत छलाह । ओ अपन एकटा मित्रकेँ कहनहु रहथि जे हुनक मृत्युक बाद हिन्दू, मुसलमान आ इसाई अपन-अपन ढँगसँ हुनका पर अपन अंधिकार जनौताह । मुदा ओ तँ 'सार्वभौम धर्म' मे निष्ठा रखैत छलाह । बम्बई प्रसीडेंसीक उदार सुधारवादी नेता एम. जी. रानाडे दस्तावेज पर ई टिप्पणी कयने रहथि– 'एहि दस्तावेजक आध्यात्मिक गहन पवित्रता, सार्वभौमिकता आ सहिष्णुता एकर सौन्दर्य आ परिपक्वताक आदर्शक प्रतीक थिक । एकर महत्त्वकेँ सम्पूर्ण रूपेँ बुझबामे हमर जनताकेँ अनेक सय वर्ष सेहो लागि सकैत अछि ।' भारतक महान पत्रकार रामानन्द चटर्जीक मानब छलनि– 'ब्रह्मसभाक स्थापना करैत काल हुनक (राममोहन रायक) उद्देश्य मात्र ई छलनि जे ई अलग-अलग धर्म आ सम्प्रदायक ओहि लोकक मिलन– स्थल बनि सकय, जे एक संग ईश्वरक आराधना करय चाहैत होथि ।' कलकत्ता मे १९०६ मे आस्तिक सभामे अपन सभापति-भाषणमे ब्रह्मर्षि आर. वेंकटरत्नम् कहलनि– 'जेना कि ब्रह्मसमाजक ट्रस्टक दस्तावेजमे कहल गेल अछि जे ई संस्था कृत्रिम भेदभावकेँ त्यागि, ईश्वर-भक्तिक प्रति सम्पूर्ण भ्रातृत्वक लेल छल आ ई साम्प्रदायिकता, अंधविश्वास सँ मुक्त आ धर्मान्ध इर्ष्या सँ अनस्पृश्य छल आ जतय मनुक्ख आ मनुक्ख सम्बन्ध नैतिकता, पवित्रता, दानशीलता आ उदारते पर आधारित भऽ सकैत अछि । एहिसँ मिलनक संभावना भऽ सकैत छल ।' महान भारतीय सुधारक केशवचन्द्र सेन 'इण्डियन -मिशन' क १ जुलाइ १८६५ क अंक मे लिखने रहथि–

'राममोहन राय कोनो धर्म वा सम्प्रदायक नहि छलाह आ ने कोनो अनुपम वा शुद्ध होयबाक हालति बला नव सम्प्रदाय वा पंथक स्थापनाक आकांक्षा हुनकामे छलनि । हुनक यैह महत्त्वाकांक्षा रहनि जे तमाम जीवन्त धर्मक अनुयायी कैं, जाति, रंग आ सम्प्रदाय भेदकैं विसरि कऽ, सत्य आ अद्वैत ईश्वरक सार्वभौम उपासनाक विलक्षण विधाक माध्यमसँ एक सूत्र मे बान्हि देल जाय । हुनक उदार मोन कोनो एक सम्प्रदायक नहि भऽ कऽ सभ धर्मक रहनि । कोनो एक गिरजाघरक सदस्य नहियो रहला पर सभक सदस्य छलाह । अद्वैत उपासनाक सिद्धान्त पर आधारित सार्वभौम गिरजाघरक स्थापना हुनक उद्देश्य बनि गेलनि ।' ब्रह्मसमाजक सुप्रसिद्ध उपदेशक सतीशचंद्र चक्रवर्ती अपन २७ सितम्बर १९३३ क धर्मोपदेश मे कहलनि– 'राममोहनक विचार छलनि जे हुनक समाज कोनो नव धर्म-सम्प्रदायक मंदिर नहि भऽ कऽ सभ पंथ आ सम्प्रदायक अनुयायी द्वारा अद्वैत ईश्वरक सामूहिक उपासनाक माध्यम सँ–देशक जनता कैं एकत्र कऽ सकय । हम प्रायः राममोहनक निष्ठा आ हुनक दृष्टिकोणकैं पूर्ण रूपेँ बुझि नहि पओने होइ–हिन्दू , मुसलमान आ इसाई अपन धर्म निष्ठा राखियो कऽ उपासनाक माध्यम सँ एक भऽसकैत छथि ।'

एहि देशक अनेक ख्यात व्यक्तिलोकनिक विचार एहि लेल उद्धृत कयल अछि जे ई महत्त्वपूर्ण तथ्य जे ब्रह्मसभा सँ विकसित ब्रह्मसमाज राममोहनक विचार वा प्रयासक फल नहि छल, स्पष्ट अछि ।

प्रसन्न कुमार टैगोर द्वारा संचालित अखबार 'रिफार्मर'क १८३१ क एकटा अंकमे ई छपल– 'ब्रह्मसभा १८२८ मे स्थापित वेदान्तिक संस्थाक स्थापना प्रख्यात आ प्रबुद्ध देशवासी बाबू राममोहन राय अनेक हिन्दू विचारक सहयोगसँ कयलनि... । एकर गोष्ठी प्रत्येक शनिकैं चितपुर रोड पर होइत अछि । एतय वेदान्त-प्रवचन आ एकमात्र अद्वैत ईश्वरक भजन होइत अछि... । इसाई वा कोनो मतसँ सम्बन्धित लोक एहिमे सम्मिलित भऽ सकैत छथि ।'

महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोरक 'तत्त्वबोधिनी पत्रिका' क अक्तूबर १८४७ क अंकमे छपल– 'एतय कहियो-कहियो साँझ कैं इसाई नेनासभ ईश्वरक भजन फारसी आ अंग्रेजीमे गाबि करैत छल ।' एही पत्रिकामे १८५४ क कोनो अंकमे महर्षिक अनुयायी आ प्रसिद्ध लेखक अक्षय कुमार दत्त लिखलनि– 'राममोहन रायक युगमे ब्रह्मसमाजक आचार्य ईश्वरक संग-संग उपनिषद आ संस्कृत ग्रंथक ऋचा गाबि जनताकैं ओकर अर्थ सेहो बुझबैत छलाह । हिन्दूक अलावा विदेशी सेहो ब्रह्मसमाजमे जा कऽ अपन भाषा मे ईश्वर-भक्तिक भजन गबैत रहथि ।'

ई तँ स्पष्ट अछि जे जँ ब्रह्मसमाज, पहिने ब्रह्मसभा कोनो विशेष सम्प्रदाय सँ सम्बन्धित होइत तँ अन्य धर्मक अनुयायी उपासनाक लेल एकर उपयोग नहि करितथि ।

राममोहनक विदेश गेलाक बाद ब्रह्मसभाक कार्यकर्त्ता लोकनि एकरा ब्रह्मसमाज

कहब आरंभ कऽ देलनि। राममोहन इंग्लैण्ड सँ अपना बेटाकेँ कलकत्तामे एकटा उपासना गीत लिखि पठौलनि आ ओ चाहैत छलाह जे हुनक ई रचना हुनका द्वारा १८३० मे स्थापित एकेश्वरवादी गोष्ठीमे गाओल जाय। पत्रमे ओ 'ब्रह्मसमाज' शब्दक प्रयोग कयलनि, मुदा ओही पत्रमे पहिने 'ब्रह्मसभा' आ तकरा बाद 'ब्रह्मसमाज' क उल्लेख भेटैत अछि। एहि सँ ई प्रमाणित होइत अछि जे 'समाज' क प्रयोग कोनो साम्प्रदायिक संस्थाक अर्थमे नहि भऽ कऽ जन-संस्थाक अर्थ मे भेल अछि। एही अर्थ केँ प्रेषित करवाक लेल आइयो 'समाज' क प्रयोग कयल जाइत अछि।

ब्रह्मसभा सन आस्तिक संस्थानमे वेदान्त-प्रवचन पन्द्रह वर्ष सँ अधिक समय धरि चलल। ब्रह्मधर्म ताधरि पंथक रूपमे जनमल नहि छल। महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोर किछु विद्वानक सहायता आ सहयोग सँ उपनिषद आ अन्य शास्त्रक एकटा संग्रह तैयार करौलनि। ब्रह्मधर्म पर पहिल प्रबंध सेहो १८४१ मे देखबा मे आयल। एही वर्ष तत्वबोधिनी सभाक एकटा गोष्ठीमे कहल गेल जे वेदान्त पर आधारित धर्म ब्रह्मधर्म मे बदलि देल गेल अछि आ बह्मधर्म आ ब्रह्मचर्चक स्थापना राममोहनक मृत्युक बहुत कालक बाद भेल।

जी. एस. लिओनार्ड द्वारा लिखित 'द हिस्ट्री औफ ब्रह्मसमाज फ्राम इट्स राइट टू द प्रेजेंट डे' (१८७९ मे प्रकाशित) मे लिखल अछि– 'हम वेदान्ती निष्ठा केँ मानैत छी।' 'वेदान्ती निष्ठा' केँ बादमे तत्वबोधिनी सभाक ११ पौष १७६८ (सन १८४६ क) एकटा बैसारमे राजनारायण बोसक प्रस्ताव आ अक्षय कुमार दत्तक अनुमोदन कयलासँ एकरा 'ब्रह्मधर्म' कहब शुरू कयल गेल।

१८४१ सँ पहिने ब्रह्मधर्म नहि छल, आ तेँ एकर समारोहक कोनो संहिता सेहो नहि छल। बह्मसमाजक नियमक आधार पर प्रथम ब्रह्म-विवाह २६ जुलाइ १८६१ केँ सम्पन्न भेल।

सभ धर्मक अद्वैतवादी लोकक लेल एकटा मिलन-स्थल बनयबाक ब्रह्मसभाक महान स्वप्नक क्षरण राममोहन रायक भारत छोड़िते शुरू भऽ गेल आ ई हुनक मृत्युक बाद एकदम समाप्ते भऽ गेल। एकर स्थान ब्रह्मसमाज लेलक आ ई मात्र हिन्दू अद्वैतवादीक भऽकऽ रहि गेल। राममोहन रायक स्वप्नक उड़ानकेँ समाप्त कयल जायब साइत तत्कालीन परिस्थितिक विकासक कारणेँ भेल छल। साइत ओहि समयक ऐतिहासिक मांगे यैह छल। कारण किछुओ रहल हो, मुदा ई स्वीकार करहि पड़त जे राममोहन रायक विशाल स्वप्न हिन्दू एकेश्वरवादीक 'ब्रह्म' क संकल्पे धरि सीमित भऽ कऽ रहि गेल। एहि नवीनीकरण मे देवेन्द्रनाथ टैगोर महत्त्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह कयलनि।

राममोहन इंग्लैंडमे

१५ नवम्बर १८३० कैँ राममोहन इंग्लैण्डक लेल एलबियन नामक जहाज सँ विदा भेलाह आ ८ अप्रैल १८३१ कैँ ओतय पहुँचलाह । राममोहनक प्रसिद्धि हुनका पहुँचबा सँ पहिनहि बहुत छल । १८१६ मे जखन वेदान्त पर हुनक अंग्रेजी मे किताब 'एन एब्रीजमेंट औफ वेदान्त' प्रकाशित भेल तँ इंग्लैण्डक 'मंथली रिपोजिटरी औफ थियोलोजी एंड जेनरल लिटरेचर' मे तकर विस्तृत आलोचना प्रकाशित भेल । जखन हुनक लिवरपुल पहुँचबाक विषयमे लोकसभकेँ ज्ञात भेलेक तँ सभटा प्रसिद्ध व्यक्ति हुनका सँ भेंट करबाक लेल अयलाह । प्रसिद्ध इतिहासकार विलियम रस्को बीमार होयबाक कारणेँ अपना पुत्रकेँ राममोहन कैँ आमंत्रित करवाक लेल हुनका लग पठौलनि । राममोहन रस्कोक घर गेलाह आ दुनू मे बहुत आत्मीयता आ घनिष्ठताक संग गपशप भेलनि । रस्कोक पुत्र ओहि भेंटक बहुत रोचक विवरण प्रस्तुत कयलनि– 'ई साक्षात्कार कहियो बिसरल नहि जा सकैछ । अभिवादनक औपचारिकता पूरा होइते राममोहन कहलनि, 'हमरा प्रसन्नता आ गौरव अछि जे हम एकटा एहन व्यक्तिसँ भेंट कऽ रहल छी जे मात्र, यूरोपे नहि, अपितु संसार भरिमे प्रसिद्ध छथि ।' रस्को उत्तर देलनि– 'हम ईश्वरक आभारी छी जे ओ हमरा एहन दिन देखबाक लेल जीवित रखलनि ।' अनेक वर्ष सँ पक्षाघात-पीड़ित होयबाक कारण किछु समय बाद रस्कोक देहान्त भऽ गेलनि ।

राममोहनक इंग्लैण्ड यात्राक तीन टा प्रमुख कारण छलनि । दिल्लीक बादशाह अकबर द्वितीय दिससँ ग्रेट ब्रिटेन सम्राटकेँ स्मरण-पत्र उपस्थित करब । सतीप्रथाक उन्मूलन लेल हाउस औफ कौमन्सकेँ स्मरण-लेख देब । हाउस औफ कौमन्समे ईस्ट इंडिया कम्पनीक चार्टरक नवीनीकरण पर होवऽबला बहसक समय ओतय उपस्थित रहबाक आवश्यकता । लिवरपुल सँ ओ तत्काल लंदन पहुँचलाह, जाहिसँ हाउस औफ कामन्स मे सुधार-प्रस्ताव केर द्वितीय पठनक अवसर पर ओतय रहि पाबथि । साँझकेँ लंदन पहुँचलाह । ब्रितानियाक महान दार्शनिक जेरेमी बेंथम हुनकासँ भेंट करय अयलाह तँ ओ आराम करबाक लेल शयन कक्षमे जा चुकल रहथि । ई ज्ञात भेला पर बेंथम ई पुरजी लिखि कऽ ओतय छोड़ि देलनि–'जेरेमी बेंथम दिस सँ अपन मित्र राममोहन रायक लेल ।' ओ राममोहनक बहुत आदर करैत छलाह । एकर एकटा प्रमाण तँ ई अछि जे एकटा एहने पुरजीमे जेरेमी लिखलनि– 'बहुप्रशंसित आ मानवताक सेवामे संलग्न महान प्रेमी ।'

इंग्लैण्ड पहुँचिते राममोहन बादशाहक माँगक पुलिन्दा ईस्ट इंडिया कम्पनीक कोर्ट औफ डायरेक्टर्स तथा लंदनक किछु प्रभावशाली व्यक्ति सभकेँ देलनि। बादशाहक किछुये माँग पूरा कयल गेल। १३ फरवरी १८३३ केँ बादशाहक आय तीन लाख टाका बढ़ा देल गेलनि।

लंदनमे राममोहन प्रतिष्ठित व्यक्ति सभसँ भेंट करबामे आ राजनीतिक बहस मे बहुत व्यस्त रहलाह। इंग्लैण्डक सम्राटक भाइ ड्यूक औफ कम्बरलैंड हुनका हाउस औफ लार्डस मे परिचित करौलकनि। जेम्स सदरलैण्डहि सँ ई ज्ञात भऽ सकलनि जे, 'सम्राटक तात्कालिक आदेशे टोरी पीयर्सकेँ इंडियन जूरी बिलक विरूद्ध मतदानसँ रोकलक।' राममोहन दास-प्रथाक उन्मूलक तथा सामान्य शिक्षाक प्रणेता लार्ड ब्रोम सँ घनिष्ठ मित्रता स्थापित कयलनि। ईस्ट इंडिया कम्पनीक निदेशक ६ जुलाइ १८३१ केँ 'सिटी औफ लन्दन टेवर्न' मे भोजक लेल निमंत्रण देलनि। चेयरमैन सभापतिक पद सम्हारलनि आ राममोहनक स्वास्थ्य आ मंगलमय जीवनक कामना कयलनि। भारतीय समाज हुनक सेवाक लेल हुनका बधाइ देलकनि। विलियम चारिक राज्याभिषेक कालमे हुनका यूरोपक सम्राटक राजदूतक संग बैसाओल गेलनि। रायल एशियाटिक सोसाइटी औफ लंदन हुनका अपन वार्षिक समारोह मे आमंत्रित कयलक। ओतय राममोहन पूर्वदेशीय प्रसिद्ध भाषाविद हेनरी टामस कोलब्रुकक आभार-प्रदर्शन कयलनि। राममोहन जनसेवक समाजवादी रार्बट ओवन सँ सेहो भेंट कयलनि। ओ राममोहन केँ अपन विचारधारा सँ प्रभावित करबाक प्रयास कयलनि।

राममोहनक इंग्लैण्ड पहुँचबाक समय देशक राजनीतिक स्थिति रिफार्म बिलक विरोधक कारणेँ बहुत गरम छल। मार्च १८३१ मे प्रस्तुत बिल कमिटी स्तरे पर अस्वीकृत भऽ गेल। तेँ संसदक अधिवेशन सेहो बरखास्त कऽ देल गेल छल। नव बिल २६ सितम्बर १८३१ केँ हाउस औफ कामन्सक अधिवेशन मे पारित कयल गेल। मुदा अक्तूबरमे हाउस औफ लार्ड्स एकरा फेर रद्द कऽ देलक। तेसर बिल मार्च १८३२ मे हास औफ कामन्समे पारित कऽकऽ हाउस औफ लार्ड्स केँ पठाओल गेल। इंगलैण्डक जनता बहुत उत्तेजित छल। लार्ड्स बिलक विषय मे रायक उत्सुकतासँ प्रतीक्षा कऽ रहल छल। एहिबेर जनसाधारणक माँगकेँ स्वीकार करैत लार्ड्स जून १८३२ मे रिफार्म बिल पारित कयलक। आयरलैंड आ स्काटलैंडक विषयमे सेहो एहिना दू टा बिल पारित भेल। राममोहन विलियम रेथबोनकेँ लिखल पत्रमे एहि बिलक पारित होयबा पर प्रसन्नता व्यक्त कयलनि।

स्वतंत्रता, सह–अस्तित्व आ समानताक भावना सँ प्रेरित फ्रांसक लेल राममोहनक मोनमे प्रशंसाक भावना छलनि। हुनके शब्दमे– 'कला आ साहित्य सँ एतेक सम्पन्न आ स्वतंत्र संविधान वला देश।' फ्रांसक सांस्कृतिक परिसरमे हुनक रचना पहुँचि चुकल छल। 'कलकत्ता टाइम्स' क सम्पादक डी. अकोस्टा ब्लोइसक विशपकेँ अबे ग्रेग्वायरक माध्यमे

राममोहनक रचना सभ पठौने छलाह तँ राममोहन फ्रांसक बुद्धिजीवी मे बहुत प्रसिद्ध रहथि। राममोहनक बारे मे एकटा पुस्तिकामे विशप लिखलनि– 'अपन रचना पर भेल आक्रमणक जाहि सादगी सँ ओ जबाब दैत रहथि, हुनक शक्तिशाली तर्क हिन्दू धार्मिक ग्रंथक विशद ज्ञान एहि बातक गवाही थिक जे ओ अपन काजक लेल उपयुक्त छथि। हुनक आर्थिक बलिदान हुनक अरुचिक परिचायक थिक। हुनक सराहना नहि कयल जा सकैछ।'

हम सभ जनैत छी जे एशियाटिक सोसाइटीक ७ जून १८२४ क बैसारमे एसोसिएट प्रतिनिधिक नियुक्तिक मामिला उठल। श्री लकाम्ते द हायटरीन आ वेरन द सेसी राममोहनक नाम सुझौलनि। सुझाओ एकटा कमिटीकेँ सौंपि देल गेल। एकर सदस्य रहथि सर्वश्री लांजुइनाई, बर्नोफ आ काल्परोथ। ई समिति एहि सुझाओक अनुमोदन कयलक आ हुनका साहित्यकारक रूपमे लेल जायब निश्चित भेल। एहि समितिक रिपोर्ट परिषद मे प्रस्तुत कयल गेल। राममोहनक विचारकेँ एसोसिएट प्रतिनिधिक उपाधि प्रदान कयल गेल ('इंडिया एंड द वर्ल्ड' क दिसम्बर १९३३ क अंक मे मैडम मारिनक लेख)।

अवकाश प्राप्त अंग्रेज अधिकारी श्री लैशलनकेँ एशियाटिक सोसाइटीक डिप्लोमा राममोहन रायकेँ स्वयं देबाक काज सुनझाओल गेल। एहि तरहेँ ओ अवैतनिक सदस्य भऽ गेलाह। १९२४ मे पेरिस सँ प्रकाशित होबऽ बला 'रेवू एन्साइक्लापेडिक' मे सिस्मोंडी राममोहनक बारे मे लिखलनि– 'भारतक विषयमे नीक जकाँ जानयबला एहि बात सँ सहमत छथि जे राममोहन प्रबुद्ध एवं कर्मठ व्यक्तिक सशक्त प्रतिनिधि छथि। राममोहन अपन देशवासीकेँ एकेश्वरवाद तथा कर्म आ नैतिकताक नीक तालमेलक सीख देबाक लेल कार्यरत छथि।'

१४ अक्तूबर १८३२ केँ राममोहन फ्रांसक सम्राटसँ भेंट कयलनि। १८३२ क दिसम्बरमे श्री पॉथियरक पेरिसमे प्रकाशित एकटा लेखमे राममोहन रायक कार्यक विस्तृत विवरण देल गेल। समय बीतला पर ब्रिटिश शासकलोकनि राममोहन केँ दिल्लीक बादशाहक विशेष प्रतिनिधि मानि कऽहुनका राजाक उपाधि देलकनि। विलियम चतुर्थ सँ सेंट जेम्स पैलेस मे भेंटक अनुमतियो राममोहनकेँ ६ सितम्बर १८३१ केँ देल गेलनि। किछु समय बाद लंदन ब्रिजक उद्घाटनक अवसरि पर राजा राममोहन केँ भोजक निमंत्रण देलनि। हुनका सम्मानमे लंदनमे केतको गोष्ठी भेल आ एहिमे जेरेमी बेंथम सन प्रसिद्ध व्यक्ति सेहो अयलाह। ब्रितानी यूनिटेरियन एसोसियेसन द्वारा आयोजित एक गोष्ठीमे जेरेमी बेंथमक जीवनी लिखयबला डा. बारिंग राममोहनक विषयमे कहलनि -' हमरा विश्वास अछि जे हुनका विषयमे हमरा सभक भावना व्यक्त होमए बला नहि अछि। हमरा स्मरण अछि जे एकबेर ओ कल्पना कयलनि जे जँ प्लेटो ,सुकरात वा मिल्टन हुनका सोझाँ आबि पाबथि तँ हुनक प्रतिक्रिया केहन होयत,हुनक भाव केहन होयत...राजा

राममोहन [illegible] करैत हमहूँ अनुभव कयल जे हमरो भीतर किछु ओहने भाव उमड़ि कऽआबि रहल अछि । हमरा मस्तिष्क मे समयक दूरी आ स्थानक दूरी जकाँ भाव जन्म लैत अछि । जे व्यक्ति हजारो माइल सँ चलि कऽआयल अछि, हुनक ओतबे स्वागत कयल जयबाक चाही, जतेक हजारो वर्ष पहिने हमसभ ओहि महापुरूष लोकनिक कयने रहितहुँ ।'

अमेरिकाक हॉवर्ड विश्वविद्यालयक भूतपूर्व अध्यक्ष डा. कर्कलैण्ड सेहो एहि गोष्ठीमे भाग लेलनि । ओ कहलनि -'राजा अमेरिका मे चर्चाक विषय छथि । ओतय लोक हिनक उत्सुकता सँ प्रतीक्षा कऽरहल छथि । श्रद्धेय डव्ल्यू. जी. फाक्स सेहो राममोहन राय कैं बहुत सम्मान देलनि । राममोहन एहि सम्मानक लेल आभार प्रदर्शनक स्वरूप एकटा भाषण देलनि, जकर अंतिम शब्द एना छल–'तर्क आ धर्मग्रंथ, समझ आ सम्पत्ति, शक्ति आ पूर्वाग्रहक बीच युद्धक स्थिति थिक आ हम एहि वातकैं मानैत छी जे अहाँक जीत निश्चित अछि... । अहाँ अनेक अवसरि पर हमरा जे सम्मान देल अछि, हम तकरा अंतिम क्षण धरि बिसरि नहि सकव ।'

आर्थिक चिन्ता आ कार्याधिक्य राममोहनक सुदृढ़ गठनक वादो हुनका पर खराप असरि कयलक । हुनक आर्थिक संकटक कारण तँ हुनक कलकत्ता स्थित प्रतिनिधि मेसर्स मेकिन्तोष एंड कम्पनी तथा लंदन प्रतिनिधि मेसर्स रिकार्ड मेकिन्तोष एंड कम्पनी फेल भऽजायब छल । हुनक मित्रलोकनि हुनका आरामक लेल लंदन छोड़ि ब्रिस्टल जयबाक सुझाओ देलनि । १८३३ क सितम्बरमे राममोहन डा. लैंट कार्पेन्टरक संरक्षिका मिस कैसलक रेस्ट हाउस मे पहुँचलाह । डा. कार्पेन्टर ब्रिस्टलक लेविन मीड चैपलक मास्टर रहथि । राममोहन कैं मित्रलोकनिक साहचर्य वहुत शांति आ आराम पहुँचौलक । मुदा १९ सितम्बरकैं ओ अकस्मात अस्वस्थ भऽ गेलाह । तेज बोखार आ माथ दर्द । फेर हालति बिगड़ैत गेलनि । डेविड हेयरक बहिन मिस हेयर हुनक सेवा-सुश्रुषा कयलनि, अनेक प्रमुख चिकित्सकों हुनक स्थिति कैं सुधारि नहि सकलाह । हालति आरो बिगड़ैत रहल आ २७ सितम्बरकैं राममोहनक देहान्त भऽ गेलनि ।

हुनक उपचार करयबला डाक्टर एस्टलीन हुनक अंतिम क्षणक विषयमे लिखने छथि– 'अति सुन्नर इजोरिया राति छल । खिड़कीक एक दिस हम, श्री हेयर आ मिस केडल गामक शान्त अर्द्धरात्रिक दृश्य देखि रहल छलहुँ । दोसर दिस ओ अजीब ढँग सँ अंतिम साँस लऽ रहल छलाह । एकरा हम नहि विसरि सकै छी । मिस हेयर कैं आब कोनो भरोस नहि छलनि, ओ राजाक लगो धरि जयबाक हिम्मति गमा चुकल छलि । लगहि राखल एकटा कुरसी पर सिसकि रहल छलि । अढ़ाय बजे श्री हेयर हमरा कोठलीमे आबि दुखद समाचार सुनौलनि । सवा दू बजे ओ अंतिम सांस लेलनि ।' आ मिस कलेक्ट लिखलनि– 'मरैत काल हुनक ठोर पर मात्र एक शब्द छल– ओम । एहि सँ यैह लगैत

अछि जे मृत्युक एकाकीपन आ जिनगीक भीड़ मे सेहो हुनक आत्माक मुख्य चिन्ता ईश्वर-स्मरण छल ।'

२८ सितम्बर १८३३ कैं दू बजेक लगभग हुनका स्टेग्रेप्लटन ग्रोवमे दफनाओल गेलनि । ओहि समय कैं मेरी कार्पेन्टर हृदय–बेधक ढँग सँ बतौलनि अछि– 'तैयारी व्यापक ढँगेँ कयल गेल । लंदन सँ श्री हेयर अयलाह । स्टेप्लटन ग्रेव पर अयबाक लेल मात्र हुनके सभकैं कहल गेल छल जे राजा सँ व्यक्तिगत स्तर पर परिचित रहथि । मिस कैसलक संरक्षक, हेयर परिवारक बेटी जकाँ सेवा कयनिहारि कन्या । कोर लेल पुत्र ब्राह्मण नोकरक संग । डाक्टर एस्टलीन आ हुनक पूज्या मां आ छोट बहिन, डाक्टर जेटोर्ड, प्रसिद्ध जॉन फास्टर, हमर पिता आ हम । दूपहरक बाद हुनक नश्वर शरीर कैं धारण करयबला ताबूत कैं कब्र दिस लऽ जायल गेल । ताबूतक पाछाँ राजाक परिचित जन छलाह । ताबूत लऽ जायबला छाँहदार गाछक नीचाँ सँ ठीक स्थान पर पहुँचलाह । मानस-पटल पर आच्छादित भावनाकैं क्यो व्यक्त धरि नहि कयलनि । जॉन फास्टर कहलनि– 'एतेक बेसी दुखमे क्यो बाजिये की सकैत अछि ।'

सन १८४२ मे राममोहनक अनुयायी देवेन्द्रनाथ टैगोर इंग्लैण्ड पहुँचलाह तँ ओ ताबूत स्टेप्लटन ग्रेव सँ बहार करबा आर्नोसवेल मे गड़बा देलनि । १८४४ मे भारतीय रीतिक अनुसार एकटा स्मारक–भवन बनाओल गेल ।

राममोहनक प्रभाव

राममोहन विदेशीकेँ कोन तरहेँ प्रभावित कयलनि, ई हुनक अंग्रेज जीवनी लेखक सोफी डावसन कातेट लिखलनि अछि– 'राममोहन इतिहासमे एकटा जीवित सेतु जकाँ छथि, जाहि पर सँ भारत अपन अलिखित इतिहास सँ भविष्य दिस जाइत अछि। पुरातन जातिवाद आ वर्त्तमान मानवता, अंधविश्वास आ ज्ञान, बहुदेववाद आ एकेश्वरवाद क नीचाँक खाधि पर ओ पुल छलाह। अपन व्यक्तित्त्वमे कतेको तरहक दुख, रीतिक परस्पर विरोधाभास आ अवश्यम्भावी ज्ञान-दीप्तिक रूप मे ओ देशवासी सभक मध्यस्थ छलाह। कुल, धर्म आ मानवताक कोनो विशिष्ट भेंट सँ उत्पन्न भावनाक हुनकामे योग छलनि। जानबाक स्वतंत्रता, ज्ञानक पिपासा, मानवता, पवित्र आ चुनल नीति, अतीतक प्रति एक टिप्पणीयुक्त सम्मान आ विद्रोहक प्रति जागरूक विरागक ओ मिश्रण छलाह, मुदा राममोहनक आन्दोलनक केन्द्र विन्दु धर्मे रहलनि। भारतीय आन्दोलनक इतिहासमे ई बात सिद्ध होयब एखन बांकी अछि। अपन घुमक्कड़ीक क्रममे धर्म हुनका बचौलकनि। पुरातन भारतीयताक ओ अनुपम भेंट छलाह। ई बात दोसर थिक जे जखन ओ छलाह तँ नवताक प्रभाव बढ़ि रहल छल। जाहि शक्तिकेँ क्यो नहि चाहैछ, राममोहन ताहि सँ जुड़ल छलाह। ओ अकस्मात राजा नहि भेल छलाह आ यूरोपीय सभ्यताक अस्थिर सम्मिश्रण हुनकामे नहि छलनि। जँ विनु आक्षेपक बात कहल जाय तँ राममोहन राय एकटा यूरेसियन छलाह। जँ हुनक विकासक सही अध्ययन करी तँ पता चलैत अछि जे ओ पुरातन कालसँ पश्चिम दिस नहि, अपितु ओहि मे सँ होइत एकटा एहन सभ्यता दिस लऽ जाइत छथि, जे नहि तँ पूर्वेक थिक, ने पश्चिमेक। ई दुनू सँ फराक आ महान अछि। धर्मक कारणेँ एकटा निरन्तरता बनल अछि। हुनक विकासशील आन्दोलनक असली शक्ति तँ हुनक धर्म छलनि। यैह छल जे हुनक आन्दोलनकेँ दिशा प्रदान कयलक, ओकरा तीव्र सेहो कयलक आ ओकर बाधा सेहो बनल।'

राममोहन एहि तरहेँ एक एहन नव भारतक अध्ययन प्रस्तुत करैत छथि जे उत्साह वर्धक तथा शिक्षा देबऽ बला सेहो अछि। पश्चिमक जनतांत्रिक राज्य सभकेँ ओ बहुत मूल्यवान अभिसूचक मानैत छथि। एहि सँ यैह सूचना भेटैछ जे हमर ब्रितानी साम्राज्य पर आधारित होयबाक बादो ई हुनक मार्ग केँ प्रभावित कऽ सकैछ। एहिमे कोनो संशय नहि जे विधना भारतक भाग्यमे किछुओ गढ़ने होथि मुदा भविष्य राममोहन रायक जीवन-चरित पर निर्भर करैछ। ई मात्र भारते नहि, आब तँ पूब–पच्छिमक द्वारि पर अछि।

यूरोपीय आ एशियायी मानव-उत्पत्तिक स्रोत पहिनो अनेक खेप मिलि चुकल अछि, आबहु मिलन दिस बढ़ि रहल अछि। आवयवला भोर हुनके जीवन पर प्रकाश दैत अछि, जनिक गाथा हमसभ एखनधरि पढ़लहुँ अछि। ओ देवदूत नहि रहितो, आगामी परिवर्त्तनक संकेत छलाह।

आधुनिक भारत पर हुनक जीवनक प्रभावक विषयमे रवीन्द्रनाथ टैगोर बहुत सुन्दर चर्चा कयने छथि– 'कोनहुँ विरल व्यक्तित्वकेँ जे एहन समय पर उत्पन्न भेल हो, जखन कि ओकर देश स्वयंकेँ बरबाद कयलाक बाद अपनहिकेँ नकारि रहल हो तँ ओकरा स्वयं केँ चीन्हबा आ सम्माननीय बनयबामे निश्चये समय लगैत अछि। ओकर ओर पाइब संगत आ न्यायोचित प्रतीत नहि होइछ, कियेक तँ लोक अपन समाजक तार स्वयं ढ़ील छोड़ि देने रहैछ आ ओकरा संगीतक सत्यं, शिवं, सुन्दरम् सँ मिलयबाक प्रयत्न हुनका सभक लेल फलदायक प्रतीत नहि होइछ।

'राममोहन राय एकटा एहन व्यक्ति रहथि, जनिका देश निर्दयतापूर्वक नकारि देने छल, जे अपन महान धरोहरि केँ स्मरण करबाक जिम्मेदारीकेँ बिसारि देलक आ अंध विश्वासमे लिप्त अपन पतनक संग सटल रहल। मुदा समय विलक्षण छल आ तेँ ओहि आक्रोश आ खौंझक बीच हुनक आगमन बहुत जरूरी छल। ओ एहि परिवर्तित मौसमक प्रतिनिधित्व करय आयल छलाह, जे दीर्घ सुखाइक बाद अबैत अछि आ अपना संग बरखाक गमक केर फोहारा सँ अमूल्य निधि छिड़िया जाइत अछि। एहीसँ सुखायल आ झरकल मन-भूमि केँ जीवन भेटैत छैक, ई उन्मत्त करय बला बुझाइत अछि आ एकर विस्तृत जानकारीक लेल ओहि समय धरि प्रतीक्षा करय पड़ैछ, जाधरि फसिल पाकि कऽ कटि नहि जाइछ आ कृषि संसार तकरा स्वीकार नहि कऽ लैछ। राममोहन अपन देशवासीक बीच एकटा अप्रिय संयोगक रूपमे अवतीर्ण भेलाह आ तत्कालीन परिवेश सँ मेल नहि खाइत छलाह। मुदा एहन होइतो गहन अंधकारमे फंसल हमर इतिहास हुनक प्रतीक्षा कऽ रहल छल– एहन व्यक्तिक, जे जीवनमे अपन देशक आत्मा आ साध्यक सम्पूर्ण महत्ताक प्रतिनिधित्व करैत हो, ओ एकाकी छलाह, किन्तु हुनका सँ पहिनहुँ भारतमे सत्यान्वेषी भेलाह आ साहसे हुनक प्रमुख सम्बल छल, जे अनुकरणीय छल।

'ई वास्तवमे गहन आश्चर्यक विषय थिक जे एहन समयमे जखन छोट-छोट रजवाड़ा भारतमे छल तँ राममोहन राय ताधरि जीवित रहलाह, ओहि जनताक लेल ओ एहन उपहार अनलाह जकरा ओ बुझि नहि सकल। एहन मस्तिष्क, जे अपन महा सूझबूझक संग पूर्व आ पश्चिमक सम्मिलन छल जे विभिन्न महत्त्वाकांक्षाकेँ सम्मिलित कयलनि, एहन मस्तिष्क जे विभिन्न सभ्यताक संगमकेँ पूर्णतः बुझलनि, जाहिसँ मानवताक महान युगारम्भ भेल, हुनका समक्ष अर्वाचीन युगक अनेक आयाम आ अनुभूति पूर्ण रूपसँ स्पष्ट अंकित छलनि। यैह ओ व्यक्तित्व छलाह जे वास्तविक रूप सँ अपना देशकेँ एहि तथ्य सँ परिचित करौलनि.

राममोहन केर जीवनक महत्त्वपूर्ण तिथि आ घटना

१७७२	२२ मइकेँ राधानगर मे जन्म ।
१८०९	रंगपुरक कलक्टर जान डिग्वीक अधीन दीवान पद पर नियुक्ति ।
१८१५	कलकत्ता मे जीवनारंभ । आत्मीय सभाक स्थापना । बंगलामे वेदान्त ग्रंथक प्रकाशन ।
१८१६	'एब्रिजमेंट औफ द वेदान्त' आ 'वेदान्त सार' लिखलनि आ बंगला, हिन्दुस्तानी आ अंग्रजीमे तकर प्रकाशन । बंगला आ अंग्रेजीमे केनोपनिषद आ ईशोपनिषदक अनुवाद ।
१८१७	हिन्दू कालेजक स्थापना । मंडूकोपनिषद आ कठोपनिषदक बंगालमे अनुवाद ।
१८१८	सती-प्रथा पर पहिल आलेखक प्रकाशन ।
१८२०	'द प्रीसेप्ट्स औफ जीसस' क प्रकाशन ।
१८२१	श्रद्धेय विलियम एडमक एकेश्वरवादक स्वीकार । संवाद–कौमुदीक प्रकाशन आरंभ ।
१८२२	'मीरात–उल– अखबार' क प्रकाशन । एंग्लो–हिन्दू स्कूलक शुरूआत । 'ब्रीफ रिमार्क्स औन एनसिऐंट फीमेल राइटर्स'क प्रकाशन
१८२३	सुप्रीम कोर्ट केँ प्रेस– अध्यादेशक विरूद्ध ज्ञापन । मीरात-उल–अखबार क प्रकाशन बन्द । शिक्षाकेँ उदार आ ज्ञानमय बनयबाक लेल एमहर्स्टकेँ पत्र ।
१८२४	सोसाइटी एशियाटिक, पेरिसक सदस्य निर्वाचित ।
१८२६	वेदान्त कालेजक न्यों लेलनि ।
१८२८	कलकत्ता मे लार्ड विलियम वेंटिंक क गवर्नर जनरलक रूपमे आगमन । ब्रह्मसभाक स्थापना । ज्यूरीक मोकदमामे ओकालति ।

१८३०	नवम्बरमे इंग्लैण्ड लेल प्रस्थान ।
१८३१	अप्रैलमे इंग्लैण्ड पहुँचलाह ।
	जेरेमी बैथम सँ लंदन मे भेंट ।
	ईस्ट इंडिया कम्पनीक भोज ।
	किंग विलियम चतुर्थक सोझाँ उपस्थित भेलाह ।
	टेलीराण्ड केँ पारपत्र समाप्त करबाक लेल पत्र ।
१८३२	रिफार्म बिलक समर्थन, बिल पारित भेल ।
	पेरिस-यात्रा । फ्रांसक किंग लुई फिलिप सँ भेंट ।
१८३३	ब्रिस्टल लग स्थित स्टेप्लटन पहाड़ी लेल
	लंदन छोड़लनि ।
	२७ सितम्बरकेँ देहान्त ।

ग्रंथ-सूची

एहि संक्षिप्त ग्रंथ– सूचीमे राजा राममोहन राय द्वारा बंगला आ अंग्रेजी मे लिखल सामूहिक संस्करणक चर्च अछि। एहि सभ भाषामे हुनका पर लिखल गेल पोथी सभ सेहो एहिमे सम्मिलित कयल गेल अछि। राममोहन सँ सम्बन्धित पोथी सभक लेल पाठक कैं 'ए लिस्ट औफ राजा राममोहन रायज पब्लिकेशंस इन डिफरेंट लैंग्वेजेज' देखबाक चाही। एहिमे 'द लाइफ एंड लेटर्स औफ राजा राममोहन' सेहो सम्मिलित अछि। दुनू महानुभाव एकर सम्पादन सेहो कयलनि अछि। सन १९६२ मे 'साधारण ब्रह्मसमाज' द्वारा एकर प्रकाशन भेल छल।

बंगला

राममोहनक बंगला कृतिक पहिल संकलित संस्करण अन्नदा प्रसाद बनर्जी द्वारा सन १८३९ मे भेल छल। बादमे निम्नलिखित प्रकाशन भेल–

राजा राममोहन राय प्रणीत ग्रंथावली' राजनारायण वसु आ अन्नदा चन्द्र वेदान्त वागीश द्वारा १८८०, कलकत्ता मे सम्पादित।

'राजा राममोहन रायेर संस्कृत ओ बंगला ग्रंथावली' सन १९०५, पाणिनी कार्यालय' इलाहबाद द्वारा प्रकाशित।

'राममोहन-ग्रंथावली' १३५९ विक्रमीय संवत, कलकत्ता मे ब्रजेन्द्रनाथ बनर्जी आ सजनीकान्त दास द्वारा सम्पादित।

अंग्रेजी

राजा राममोहन रायक अंग्रेजी कृतिक एकत्र संकलन, जे अखन धरि प्रकाशित भेल अछि, एहि प्रकार अछि–

'द इंगलिश वर्क्स औफ राजा राममोहन राय', जोगेन्द्रचन्द्र घोष द्वारा संपादित, ईशानचन्द्र बोस द्वारा संकलित आ प्रकाशित, अंक-१, ओरियेंटल प्रेस, कलकत्ता सन १८८५।

'द इंगलिश वर्क्स औफ राजा राममोहन राय,' जोगेन्द्रचन्द्र घोष द्वारा सम्पादित सन १९०१, कलकत्तामे श्रीकान्त राय द्वारा तीन अंकमे पुर्नप्रकाशित।

'द इंगलिश वर्क्स औफ राजा राममोहन राय', किछु अतिरिक्त पत्र आ 'तुहफात

-उल-मुवाहिदीन' क अंग्रेजी अनुवाद । रामानन्द चटर्जी द्वारा एकटा भूमिका । पाणिनी कार्यालय, इलाहबाद, सन १९०६ ।

'द इंगलिश वर्क्स औफ राजा राममोहन राय,' कालिदास नाग आ देवज्योति वर्मन द्वारा सात भागमे सम्पादित, एक सँ छओ भाग धरि एखन उपलब्ध, साधारण ब्रह्मसमाज, कलकत्ता द्वारा सन १९४५-५१ मे प्रकाशित ।

राममोहन पर केन्द्रित

बंगला

ब्रजेन्द्रनाथ बनर्जी : राममोहन राय, साहित्य-साधक-चरितमाला, सं. १६, चतुर्थ-संस्करण, बंगीय साहित्य परिषद, १३५३ वि. सं.

शशिभूषण बसु : राजा राममोहन रायेर जीवनी, द्वितीय संस्करण, कलकत्ता, १३३२ वि. सं.

अजित कुमार चक्रवर्ती : राजा राममोहन, कलकत्ता, १९३४

नगेन्द्रनाथ चटर्जी : महात्मा राजा राममोहन रायेर जीवनचरित, पांचम संस्करण, इंडियन प्रेस, इलाहबाद, १९२८

जोगानन्द दास : राममोहन ओ ब्रह्मो आन्दोलन, साधारण ब्रह्मसमाज, कलकत्ता, १३५३ वि. सं.

प्रभातचद्र गांगुली : राममोहन प्रसंग, साधारण ब्रह्मसमाज, कलकत्ता, १३५३ वि. सं.

शिवनाथ शास्त्री : राममोहन राय, कलकत्ता, १८८६

क्षितिमोहन सेन शास्त्री : युगगुरू राममोहन : कलकत्ता, १९५२

रवीन्द्रनाथ टैगोर : भारत पथिक राममोहन राय, विश्वभारती, १३६६ वि. सं.

अंग्रेजी

उपेन्द्रनाथ बाल : राममोहन राय : ए स्टडी औफ हिज लाइफ, वर्क्स एंड थाउट्स, यू. राय एंड संज, कलकत्ता, १९३३

ब्रजेन्द्रनाथ बनर्जी : राजा राममोहन रायज मिशन टू इंगलैण्ड, एन. एम. राय चौधुरी एण्ड कम्पनी, कलकत्ता, १९२६

लांत कार्पेन्टर : ए रिव्यू औफ द लेबर्स, ओपिनियन्स एंड कैरेक्टर औफ राजा राममोहन राय इन ए डिसकोर्स औन आकेजन औफ डेथ, डेलीवर्ड इन लेविन्स मीड चेपल,

ब्रिस्टल, ए सीरीज औफ इलस्ट्रेटिव एक्सट्रैक्ट्स फ्राम हिज राइटिंग्स, एंड ए बायोग्राफिकल मेमोवायर टू ह्विच इज सबज्वाइण्ड औन एग्जामिनेशन औफ सम डेरोगेटरी स्टेटमेंन्ट्स इन द एशियेटिक जर्नल, लन्दन एंड ब्रिस्टल- १८३३

मेरी कार्पेन्टर : लास्ट डेज इन इंग्लैण्ड औफ द राजा राममोहन राय, लंदन १८६६ राममोहन लाइब्रेरी द्वारा पुनर्मुद्रित, १९१५

सतीशचन्द्र चक्रवर्ती : द फादर औफ माडर्न इंडिया : कममोरेशन वाल्यूम औफ द राममोहन राय सेनटेनरी सेलिब्रेसन्स, १९३३, कलकत्ता, १९३५

रामानन्द चटर्जी : राममोहन राय एंड माडर्न इंडिया, १९१८

सोफिया डबसन कलेक्ट : द लाइफ एंड लेटर्स औफ राजा राममोहन राय, तृतीय संस्करण, साधारण ब्रह्मसमाज, १९६२

नलिनचन्द्र गांगुली : राजा राममोहन राय, बिल्डर्स औफ़ माडर्न इंडिया सीरीज, वाय. एम. सी. ए. पब्लिकेशन्स, कलकत्ता, १९३४

अमल होम : राममोहन राय : द मेन एण्ड हिज वर्क, कलकत्ता, १९३३

जतीन्द्र कुमार मुजुमदार आ रामप्रसाद चन्द द्वारा संपादित : लेटर्स एण्ड डाक्यूमेंट्स रिलेटिंग टू द लाइफ औफ राजा राममोहन राय, प्रथम खण्ड (१७९१-१८३०), ओरिऐंटल बुक एजेन्सी, कलकत्ता, १९३८

जतीन्द्र कुमार मजुमदार द्वारा सम्पादित : राजा राममोहन राय एण्ड द लास्ट मुगल्स : ए सेलेक्सन फ्राम ऑफिसियल रेकर्ड्स, १७७५-१८४५, ऐतिहासिक भूमिकाक संग, आर्ट प्रेस, १९३९

जतीन्द्र कुमार मजुमदार द्वारा सम्पादित : राजा राममोहन राय एंड प्रोग्रेसिव मूवमेंट्स इन इंडिया : ए सेलक्सन फ्राम रेकर्ड्स, १७७५-१८४५, ऐतिहासिक भूमिकाक संग, आर्ट प्रेस, १९४१

मैक्समूलर : वायाग्रेफिकल एसेज, लौंगमैन्स, लन्दन १८८४

एड्रिन म्योर : राममोहन राय एण्ड अमेरिका, साधारण ब्रह्मसमाज, कलकत्ता, १९४२

आर. एन. समद्दार : राजा राममोहन राय, १९११

ब्रजेद्रनाथ शील : राममोहन राय, द यूनिवर्सल मेन, साधारण ब्रह्मसमाज, प्रकाशन वर्षक उल्लेख नहि अछि ।

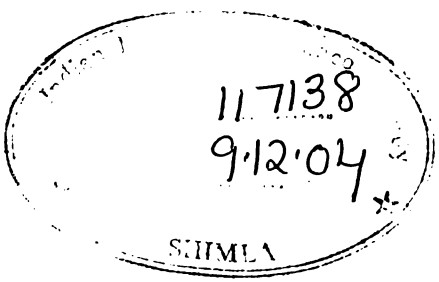

□

राजा राममोहन राय आधुनिक भारतक पिता, संसारमे तुलनात्मक धर्मशास्त्रक अध्ययनक प्रथम प्रामाणिक शोधकर्त्ता, अपना समयक एक श्रेष्ठ समाज-सुधारक, विश्वात्मक मानवतावादक कल्पनाक उद्‌गाता आ नवयुगक भविष्यद्रष्टा मानल जाइत छथि। जीवनक विविध क्षेत्रमे हुनक योगदान ठीके विलक्षण छल, तैयो ई सर्वसाधारण कें विदित नहि छैक जे बंगला गद्यक तर्कप्रधान शैलीक ओ प्रथम लेखक छलाह। कविता सँ सेहो हुनक लेखनी अपरिचित नहि छल : भगवद्‌गीताक बंगला पद्यमे ओ अनुवाद कयलनि आ किछु भजन सेहो रचलनि। हुनक बंगला व्याकरण सँ हुनक अपन मातृभाषा पर अधिकार सुप्रसिद्ध अछि। ई व्याकरण हुनके समयक सर्वोत्तम रचना नहि, अपितु बादक प्रयत्नहुँ मे सर्वश्रेष्ठ अछि। हुनका अनेक पूर्वी आ पश्चिमी भाषा पर अधिकार छलनि, जाहि सँ ओ एहन शैली निर्मित कऽसकलाह जे सहज, सरल, सोझ आ अभिव्यक्तिपूर्ण अछि।

सौम्येन्द्रनाथ टैगोर द्वारा मूलतः अंग्रेजीमे लिखित राजा राममोहन रायक जीवन आ कार्य पर ई आलेख सिद्ध करैत अछि जे ओ आधुनिक भारतीय साहित्यमे एक नवयुग निर्माता छलाह।

पन्द्रह टाका

Library IIAS, Shimla
MT 923.654 R 812 T
00117138

ISBN 81-7201-862-2